ISBN:978-93-5692-746-9

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन



डॉ. राजीव अग्रवाल
प्रतिमा देवी
आजाद सिंह

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल
प्रोफेसर- शिक्षा संकाय
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

प्रतिमा देवी
बी०ए०, एम०एड०

आजाद सिंह
बी० एस-सी०, बी०एड०

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल
प्रतिमा देवी
आजाद सिंह

E-book संस्करण: 2026
मूल्य: ₹99
ISBN: 978-93-5692-746-9

प्रकाशक -

आजाद सिंह
तेंदुआ, भांडीवार, शंकरगढ़
जिला-प्रयागराज (उ०प्र०)
मो.-+91-9919480458
ई-मेल: dr.azad2601200@gmail.com

प्राक्कथन

मानव सभ्यता के उदय के साथ ही सोचना, विचारना और चिंतन करना मनुष्य का स्वभाव रहा है। इस स्वाभाविक मानसिक प्रक्रिया से मनुष्य के मन में लगातार यह विचार आता रहा कि मैं क्या हूँ, कहाँ से आया हूँ, मेरा भविष्य क्या है। विचारों की यह प्रक्रिया मानव में हर पल बनी रहती है। वर्तमान और अतीत के बीच निरंतर चलने वाला संवाद ही इतिहास है। इसके अध्ययन से मनुष्य की विवेक, बुद्धि प्रकाशित होती है। इतिहास के माध्यम से किसी गरिमामय घटना, किसी महान व्यक्ति या किसी गौरवशाली काल को जीवंत किया जाता है ताकि वर्तमान पीढ़ी को प्रेरणा मिल सके। आज की नई पीढ़ी में पाश्चात्य संस्कृति के प्रति जो आकर्षण पैदा हुआ है, उसे समाप्त करने के लिए हमें गौरवशाली इतिहास को फिर से पुनर्जीवित करना होगा।

आज के परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन ही आधुनिक समस्याओं का निदान करने में सक्षम है। वर्तमान में हम जो इतिहास पढ़ते है, वह हमारे देश का इतिहास है ही नहीं, क्योंकि हमारे गौरवशाली अतीत के पन्नों को नष्ट कर दिया गया है। अतः गौरवशाली इतिहास को पुनर्जीवित करना ही मेरे शोध का मूल विषय है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है, **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन।** इस पुस्तक को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में अध्ययन परिचय के अंतर्गत भारत में माध्यमिक शिक्षा का विकास एवं स्वरूप, इतिहास शिक्षण की समस्याएँ, अध्ययन के उद्देश्य, परिसीमांकन तथा अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण के अंतर्गत अध्ययन से संबंधित विभिन्न शोध अध्ययन की समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

तृतीय अध्याय में चयनित 9 गौरवशाली गाथाओं का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में शोध अध्ययन की प्रक्रिया से अवगत कराया गया है।

पंचम अध्याय में संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन किया गया है।

षष्ठ अध्याय में शोध अध्ययन से संबंधित निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध-प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य उद्देश्यपरक होता है और यह उद्देश्य तभी सार्थक हो सकता है जब शोध कार्य के परिणामों का उचित क्रियान्वयन किया जाए। इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने की नितांत आवश्यकता होती है। एक पुस्तक के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रंथ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है, हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः अनुभवी विद्वतगण त्रुटियों से अवगत कराने का कष्ट करें, जिससे अगले संस्करण में सुधार को दूर किया जा सके, हम अत्यंत आभारी रहेंगे।

दिनांक - 25/02/2026
स्थान - तेंदुआ, शंकरगढ़ (प्रयागराज)

डॉ० राजीव अग्रवाल
प्रतिमादेवी
आजाद सिंह

विषय सूची

तालिका सूची

चित्र सूची

प्रथम अध्याय : अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

1.3 समस्या कथन

1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

1.7 परिकल्पनाएँ

1.8 अध्ययन का परिसीमांकन

1.9 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

1.1 प्रस्तावना

मानव जाति के विकास का आधार उसके भूत, वर्तमान और भविष्य से अभिन्न रूप से जुड़ा है। मानव की सभ्यता एक अवयवी उपज है, जिसमें वर्तमान-भूतकाल की जड़ों पर पनपता है और भविष्य के लिये आधार बनाता है।

मानव समस्त प्राणियों में बौद्धिक रूप से श्रेष्ठ है, उसमें ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान की क्षुधा तृप्त करने की असीम अभिलाषा व क्षमता रहती है। वह विविध विषयों का अध्ययन, उनकी मीमांसा, अन्वेषण, विश्लेषण करने में असीम आनन्द का अनुभव प्राप्त करता है। ज्ञान द्वारा वह अपने लोक-परलोक के ऐहिक, लौकिक व धार्मिक जीवन तथा अपने व्यक्तित्व को सुधारने की आकांक्षा रखता है। आज का सामाजिक परिवेश द्रुत गति से परिवर्तित हो रहा है जिसके कारण सामाजिक समरसता के मुद्दे एवं मानव मूल्यों व कार्यकुशलता के निर्माण की समस्या जटिलता बनती जा रही है। इस बिन्दु को अपेक्षित गम्भीरता के साथ आलोचनात्मक चिंतन के घेरे में लाना है, जिससे मानव समाज को एक नये शैक्षिक आयाम की प्राप्ति हो सके।

मानव की उत्पत्ति के समय से ही यह प्रमाण मिले हैं कि जितनी भी उन्नति या प्रगति मानव जाति ने की है, वह उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण ही सम्भव हो सकी है। मानव संसार के समस्त प्राणियों में उत्कृष्ट माना गया है। भाषा, चिन्तन, सृजनात्मकता, सहयोग, सामाजिक एवं व्यावसायिक लालसा जैसी मूल प्रवृत्तियों से अलंकृत मानव निःसंदेह रूप से सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मनुष्य की इन्हीं सब मूल प्रवृत्तियों एवं अन्तर्निहित क्षमताओं के विकास की प्रक्रिया को हम शिक्षा के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। शाब्दिक व्युत्पत्ति के आधार पर शिक्षा का तात्पर्य सीखने-सिखाने एवं बालक या मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों गुणों एवं क्षमताओं को बाहर निकालने तथा बाह्य शक्तियों के विकास की सकारात्मक प्रक्रिया से है।

1.1.1 शिक्षा : विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है। इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशसन के विकास में 'शिक्षा' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारम्भ कर देता है। वातावरण एवं पर्यावरणा के साथ

अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है। शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

रेमण्ड - "शिक्षा विकास की वह प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य बचपन से लेकर प्रौढ़ता की ओर प्रगति करता है।"

महात्मा गांधी - "शिक्षा से मेरा तात्पर्य-बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क व आत्मा का उत्कृष्ट विकास है।"

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है अपितु उनका चारित्रिक विकास भी करती है। संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य का शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनाने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किये जाते है जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। माध्यमिक शिक्षा बालक की शैक्षिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक क्षेत्र का चयन कर उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है।

1.1.2 माध्यमिक शिक्षा: ज्ञान की कडी

भारत में माध्यमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा से है। माध्यमिक शिक्षा किशोर बच्चों की शिक्षा है, उनके निर्माण की शिक्षा है। माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कडी होती है, क्योंकि इसमें प्रवेश कर छात्र अपने को जीवन के विशिष्ट क्षेत्रों में कार्य करने के लिये तैयार करते है।

अतः माध्यमिक शिक्षा ज्ञान की वह कडी है, जो अधिकतर छात्रों के लिये पूर्ण शिक्षा साबित होती है। माध्यमिक स्तर को एक ऐसी पूर्ण इकाई के रूप में विकसित किया जाता है कि उसके द्वारा बच्चों के व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सके, उन्हें किसी व्यवसाय में निपुण किया जा सके और उन्हें सामान्य नागरिक के रूप में तैयार किया जा सके।

1.1.3 भारत में माध्यमिक शिक्षा का विकास

भारतीय शिक्षा के इतिहास को अध्ययन की सुगमता की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा जा सकता है-**प्राचीनकाल, मध्यकाल और आधुनिककाल।** प्राचीनकाल एवं मध्यकाल में माध्यमिक शिक्षा का विकास अपने स्वतन्त्र रूप में नहीं था। भारत में माध्यमिक शिक्षा आधुनिक युग की देन है। माध्यमिक शिक्षा का विकास काल यहीं से प्रारम्भ माना जाता है। वैदिक काल से आधुनिक काल तक माध्यमिक शिक्षा में कई उतार-चढ़ाव आये जिससे माध्यमिक शिक्षा में समय-समय पर कई बदलाव देखने को मिले।

1.1.3.1 प्राचीनकाल में माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप

प्राचीनकाल में जिस शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ उसे **वैदिक शिक्षा** प्रणाली कहते है। प्राचीनकाल में शिक्षा के दो ही स्तर थे- **(1) प्राथमिक शिक्षा (2) उच्च शिक्षा।** प्रारम्भिक शिक्षा छात्रों को घर पर दी जाती थी। उस समय तक बालक उठना, बैठना, बोलना, खाना, पीना, खेलना, गिनती अक्षर सीख लेता था। वैदिक काल में उच्च शिक्षा की व्यवस्था गुरूकुलों में होती थी। 8 से 12 वर्ष की आयु पर बच्चों का गुरूकुलों में प्रवेश होता था। अर्थात् माध्यमिक शिक्षा उच्च शिक्षा में ही समाहित थी उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था।

1.1.3.2 मध्यकाल में माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप

मध्यकाल में जिस शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ उसे **मुस्लिम शिक्षा** प्रणाली कहते है। मध्यकाल में भी शिक्षा दो स्तरों में विभाजित थी-**(1) प्राथमिक शिक्षा (2) उच्च शिक्षा।** प्राथमिक शिक्षा **''मकतब''** में दी जाती थी, जब शिशु 4 वर्ष, 4 माह, 4 दिन का हो जाता तब **''बिस्मिल्लाहखानी''** की रस्म के द्वारा प्राथमिक शिक्षा का आरम्भ कराया जाता था। उच्च शिक्षा 12 वर्ष की आयु के बाद प्रारम्भ होती थी। उच्च शिक्षा संस्था को **मदरसा** कहा जाता था तथा साहित्य, **धर्मशास्त्र** और **दर्शनशास्त्र** के छात्रों को क्रमशः **कामिल, आलिम** और **फाजिल** की उपाधियाँ दी जाती थी। अर्थात् माध्यमिक शिक्षा उच्च शिक्षा में ही समाहित थी प्राचीन काल की तरह उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था।

1.1.3.3 आधुनिक काल में माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप

भारत में माध्यमिक शिक्षा आधुनिक युग की देन है। **''माध्यमिक शिक्षा''** शिक्षा का वह समय है जो मुख्य रूप से लगभग 12 से 17 वर्ष के बीच की आयु के बालकों के लिये होती है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरान्त देश में माध्यमिक शिक्षा ने पर्याप्त विकास किया। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के कुछ ही दिनों पश्चात् भारत सरकार ने **23 सितम्बर, 1952 को डॉ० लक्ष्मण स्वामी मुदालियर की अध्यक्षता** में **''माध्यमिक शिक्षा आयोग''** की नियुक्ति की गयी। उन्हीं के नाम पर इसे **मुदालियर आयोग** कहा गया। आयोग ने पाठ्यचर्या में विविधता लाने, एक मध्यवर्ती स्तर जोड़ने का पाठ्यक्रम शुरू किया। सेकण्डरी शिक्षा को दो भागों में होना चाहिये। उच्च तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम में एक मूल विषय रहे जो अनिवार्य रहे जैसे-गणित, सामान्य ज्ञान, कला, संगीत आदि।

1.1.4 माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप

माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च के बीच की कड़ी होती है। माध्यमिक शिक्षा को शिक्षा का दूसरा अंतिम चरण माना जाता है। माध्यमिक शिक्षा दो स्तरों में होती है। **निम्न माध्यमिक शिक्षा** एवं **उच्च माध्यमिक शिक्षा**। माध्यमिक शिक्षा आमतौर पर छह साल की प्राथमिक शिक्षा के बाद होती है। कोई भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए दो महत्त्वपूर्ण कारक है-विद्यालय, शिक्षण विषय।

1.1.4.1 विद्यालय

विद्यालय वह स्थल है जहाँ शिक्षा प्रदान की जाती है। विद्यालय एक ऐसी संस्था जहाँ बच्चों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं नैतिक गुणों का विकास होता है। विद्यालय विभिन्न प्रकार के होते है-

- **सरकारी विद्यालय -** सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों को सरकारी विद्यालय कहा जाता है।
- **अनुदानित विद्यालय -** ऐसे शिक्षण संस्थान जो प्रबन्ध समिति तथा राज्य सरकार द्वारा संयुक्त रूप से संचालित होते है। अनुदानित विद्यालय कहलाते है।
- **निजी विद्यालय -** निजी विद्यालय वह शिक्षण संस्था है जो व्यक्ति विशेष द्वारा संचालित किये जाते है। ये दो प्रकार के होते हैं-

(1) संस्थाओं द्वारा संचालित - ऐसे विद्यालय जो किसी विशेष संस्थाओं की सहायता द्वारा संचालित किये जाते है।

(2) व्यक्ति विशेष द्वारा संचालित - ऐसे विद्यालय जिनका संचालन किसी व्यक्ति विशेष की सहायता के द्वारा किया जाता है।

1.1.4.2 शिक्षण विषय

ऐसा विषय जो शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य समन्वय स्थापित करता है शिक्षण विषय कहलाता है। इसको निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया है।

- **वाणिज्य वर्ग -** धन प्राप्ति के उद्देश्य से वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना ही वाणिज्य कहलाता है।

इसमें निम्न विषय शामिल है-

अनिवार्य विषय	-	सामान्य हिन्दी
ऐच्छिक विषय	-	अंग्रेजी
		अकाउंटेंसी
		बिजनेस स्टडीज
		इकोनामिक्स
		इनफारमेंटिक्स
		प्रैक्टिस
		मैथमैटिक्स

- **विज्ञान वर्ग**

विज्ञान वह व्यवस्थित ज्ञान या विद्या है जो विचार, अवलोकन, अध्ययन और प्रयोग से मिलती है, जो किसी अध्ययन के विषय की प्रकृति या सिद्धान्तों को जानने के लिए किये जाते है। विज्ञान शब्द का प्रयोग ज्ञान की ऐसी शाखा के लिए भी करते है, जो तथ्य, सिद्धान्त और तरीकों का प्रयोग परिकल्पना से स्थापित और व्यवस्थित करती है।

विज्ञान वर्ग में निम्न विषय शामिल हैं-

अनिवार्य विषय	-	सामान्य हिन्दी
ऐच्छिक विषय	-	अंग्रेजी
		संस्कृत

भौतिक विज्ञान

रसायन विज्ञान

गणित

कम्प्यूटर

जीव विज्ञान

- **कला वर्ग** - इस वर्ग के अन्तर्गत ऐसे विषय सम्मिलित है, जो मन के अन्तःकरण की सुन्दर प्रस्तुती है। इसमें निम्न विषय शामिल है-

अनिवार्य विषय - साहित्यिक हिन्दी

ऐच्छिक विषय - अंग्रेजी

संस्कृत

उर्दू

अर्थशास्त्र

समाजशास्त्र

गृह विज्ञान

शिक्षा शास्त्र

तर्क शास्त्र

मनोविज्ञान

चित्रकला

भूगोल

नागरिक शास्त्र

इतिहास

1.1.5 इतिहास का आशय वर्गीकरण एवं महत्त्व

इतिहास का शाब्दिक अर्थ है- **बीती हुई घटनाओं और पुरुषों का कालक्रम के अनुसार वर्णन।** इतिहास में हम महान् लोगों के बारे में पढ़ते हैं कि उन्होंने अपने शासनकाल में क्या-क्या कार्य

किए। इसके अतिरिक्त इतिहास यह भी बताता है कि इन लोगों ने खोज, युद्ध और उन्नति में अपना क्या-क्या योगदान दिया है।

इतिहास शब्द का प्रयोग विशेषतः दो अर्थों में किया जाता है, एक है प्राचीन अथवा विगत काल की घटनाएँ और दूसरा उन घटनाओं के विषय में धारणा। इस प्रकार इतिहास शब्द का अर्थ है। परम्परा से प्राप्त उपाख्यान समूह **(जैसे की लोककथाएँ),** वीरगाथा **(महाभारत)** या ऐतिहासिक साक्ष्य, इतिहास के अन्तर्गत हम जिस विषय का अध्ययन करते हैं उसमें अब तक घटित घटनाओं या उससे संबंध रखने वाली घटनाओं का काल क्रमानुसार वर्णन होता है। दूसरे शब्दों में मानव की विशिष्ट घटनाओं का नाम ही इतिहास है।

प्रो0 घाटे - ''इतिहास हमारे सम्पूर्ण अतीत का पूर्ण विवरण एवं वैज्ञानिक अध्ययन है।''

हेनरी जॉनसन - ''भूतकालीन घटनाओं का उल्लेख ही इतिहास है।''

इतिहास हमारे सोचने-समझने की शक्ति को विकसित करता है और यह बताता है कि वर्तमान में हम क्या है, और भूतकाल में क्या थे, बिना इतिहास के ज्ञान के व्यक्ति अच्छा निर्णय नहीं कर पाता। इतिहास से हमें युद्ध की हार जीत के अतिरिक्त उस समय की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक दशा का भी पता चलता है। शिक्षा पद्धति, धर्म का प्रचार प्रसार, रहन-सहन, भोजन, वस्त्र, कला और संस्कृति का ज्ञान मिलता है। उस समय रचा गया साहित्य आज भी इसका साक्षी है।

अध्ययन की दृष्टि से भारतीय इतिहास को समझने के लिये 3 भागों में वर्गीकृत किया गया है, जो इस प्रकार है-

भारत का इतिहास : वर्गीकरण

काल	प्राचीन काल	मध्यकाल	आधुनिक काल
वर्ष शासक	अज्ञात-750ई0 प्रायः हिन्दू	750-1750ई0 मुस्लिम	1750-1947 तक ईसाई-अंग्रेज
विचार धाराएँ	**शास्त्रीय विचारधारा का उदय।** शास्त्रों के अनुसार शासन जैसे-वेद, पुराण,	**निरंकुश विचारधारा का उदय।** इस काल के शासकों (सुल्तान व शहंशाह) का	**आधुनिक विचारधारा का उदय।** इस काल के शासक अंग्रेज थे इस काल में कुछ नवीन

	महाकाव्य, स्मृति, बौद्धग्रन्थ, जैनग्रन्थ आदि के अनुसार समाज में नियमों का पालन, इन ग्रन्थों के नियमों का पालन राजा (शासक) तथा प्रजा दोनों करते थे।	आदेश/कथन ही नियम व कानून रहता था। जिसके कारण इस काल में निरंकुशता चरम पर था।	विचारधाराएं जैसे- उपनिवेशवाद, मानववाद, मूल- अधिकार, राजनैतिक पार्टी, लोकतन्त्र, स्वराज व स्वतन्त्रता जैसी नवीन विचारधाराओं का उदय हुआ।

इतिहास विषय का महत्त्व इसलिये है क्योंकि इतिहास व्यक्ति और राष्ट्र की प्रगति को दर्शाता है। हमारे पूर्वजों द्वारा की गयी गलतियों को न दुहराने की प्रेरणा भी देता है। इतिहास अगर मनुष्य की कृतियों का लेखा-जोखा है, तो निश्चित ही मनुष्य को समग्रता में जानने का और कोई उपाय ही नहीं है। इतिहास के माध्यम से किसी गरिमामय घटना, किसी महान व्यक्ति या किसी गौरवशाली काल को जीवंत किया जाता है ताकि वर्तमान पीढ़ी को प्रेरणा मिल सके। इतिहास मानव समाज का उसमें परिवर्तन की गतिकी का अध्ययन करता है। अतीत में यह क्षेत्र प्रागैतिहासिक काल तक फैलता जा रहा है तो दूसरी ओर वर्तमान को भी छूने लगा है, साम्प्रतिक इतिहास की अवधारणा के साथ इतिहास का अध्ययन विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है क्योंकि इतिहास का अध्ययन संस्कार और संतुलन के लिए परमावश्यक है। व्यक्ति समाज में जीता है और समाज इतिहास में, इसलिए व्यक्ति और समाज का अतीत के प्रति नैसर्गिक लगाव होता है। वर्तमान को व्यक्ति और इतिहास दोनों गढ़ते है, साथ ही स्वयं व्यक्ति भी इतिहास द्वारा गढ़ा हुआ होता है इसलिए व्यक्ति को सचेत रूप से इतिहास को जानना, समझना और रचना चाहिए।

1.1.6 इतिहास शिक्षण की समस्याएँ

वर्तमान समय विज्ञान और आधुनिकता का काल कहा जाता है। इसलिये आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों में इतिहास शिक्षण के प्रति रूचि और जागरूकता का अभाव पाया जाता है, इसके लिये निम्नलिखित समस्याएँ दृष्टिगत है-

- आधुनिक जीवन में इतिहास की उपयोगिता का अभाव।
- विद्यालय के अध्यापकों का इतिहास विषय के प्रति जागरूक न होना।

- इतिहास विषय के प्रति नीरसता।
- इतिहास शिक्षण में शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग न करके रटने पर बल देना।
- ऐतिहासिक कालक्रमों की तिथि, उत्तराधिकारियों के नाम समझने में विसंगतियों का होना।
- अतीत के आधार पर वर्तमान के प्रति सजगता का अभाव।
- छात्रों में इतिहास से सम्बन्धित सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक जागरूकता का अभाव।
- इतिहास विषय के प्रति अध्यापकों की गलत अवधारणा।
- इतिहास शिक्षण में वैज्ञानिक प्रवधियों की उपयोगिता का अभाव।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

किसी भी राष्ट्र या समाज का अपना इतिहास होता है और उस राष्ट्र की अपनी सभ्यता एवं संस्कृति होती है, इसलिए इतिहास विषय का अध्ययन प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह अपने संस्कृति विशेषकर परम्परा एवं रीति-रिवाजों को जाने और उससे कुछ सीख लेकर अपने राष्ट्र या समाज के विकास में योगदान दे।

शोधकर्त्री स्वयं इतिहास विषय की छात्रा होने के साथ-साथ वर्तमान में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में शिक्षणरत है। विद्यार्थियों को प्रशिक्षण के दौरान महसूस किया कि माध्यमिक विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन अनिवार्य विषय के रूप में कक्षा-10वीं तक अध्ययन कराया जाता है। सामाजिक अध्ययन विषय के अन्तर्गत इतिहास विषय को भी पढ़ाया जाता है। इसके बावजूद विद्यार्थियों में गौरवशाली इतिहास की समझ का अभाव देखा गया और उनमें गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता भी कम पाई गयी। अतः माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित निम्नलिखित प्रश्न उठने स्वाभाविक थे-

1. क्या इतिहास शिक्षण के माध्यम से ऐतिहासिक सम्प्रत्ययों को विकसित किया जा सकता है?
2. क्या इतिहास विषय में रूचि विकसित कर विद्यार्थियों को इतिहास के प्रति जागरूक किया जा सकता है?
3. क्या भारत के गौरवशाली इतिहास की समझ व उसके प्रति जागरूकता पैदा कर जीवन में उनकी महत्ता को बताया जा सकता है?

4. क्या गौरवशाली इतिहास के प्रति U.P. Board के विद्यार्थियों को जागरूक किया जा सकता है।

5. क्या गौरवशाली इतिहास के प्रति C.B.S.E. Board के विद्यार्थियों को जागरूक किया जा सकता है।

1.3 समस्या कथन

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन।"

1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

इतिहास मनुष्य के अतीत की गौरवपूर्ण देन है। गौरवशाली इतिहास हमें अतीत कालीन मानवीय समाज का ज्ञान प्रदान करता है। समाज के स्वरूप, क्रमिक विकास, विचारधाराओं का पारस्परिक संघर्ष, मानवीय स्वभाव तथा मानव प्रगति का विवरण आदि का ज्ञान इतिहास द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। आज के विज्ञान के युग में अन्य विषयों की तुलना में विज्ञान विषयों की सार्थकता बढ़ती जा रही है, किन्तु मानव विकास की वैज्ञानिक प्रकृति को स्पष्ट करने में इतिहास के महत्त्व को कम नहीं किया जा सकता। **चार्ल्स फर्थ** ने लिखा है-

"इतिहास न केवल ज्ञान की एक शाखा है, जिसे पढ़ने के लिए पढ़ा जाए वरन् एक विशेष प्रकार का ज्ञान है जो मनुष्य के दैनिक जीवन के लिए उपयोगी है।"

इस शोध अध्ययन का औचित्य शैक्षिक, नैतिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक, सूचनाओं को दृष्टिगत करना है। अतीत की आधारशिला पर वर्तमान को और वर्तमान के आधार पर भविष्य को मजबूत करने के लिए मूलभूत ऐतिहासिक जागरूकता लाना है। इसके द्वारा हम छात्रों में नैतिक गुणों का विकास कर सकते है। गौरवशाली इतिहास में ही महान पुरुषों के चरित्र का सुंदर चित्रण किया जाता है। अतः इतिहास विषय के अध्ययन द्वारा छात्रों को वेद साहित्य, पुराण, रामायण, उपनिषद् जैसे शास्त्रों का अध्ययन कराते हैं जिससे छात्रों में आध्यात्मिक गुणों का संचार होता है और साथ ही साथ उनमें सांस्कृतिक मूल्यों को भी हस्तांतरित किया जा सकता है।

छात्रों में इतिहास विषय के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर उनमें विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी, सभ्यताओं की खोज, देश का निर्माण, स्वदेश प्रेम की भावना को जागृत करके, स्वतंत्रता समानता की भावना का क्रमिक विकास आदि बिन्दुओं को ग्रहण कराया जा सकता है।

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त प्रमुख तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण निम्न प्रकार से किया गया है-

1.5.1 माध्यमिक स्तर

माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 9-12 तक की शिक्षा से है।

1.5.2 विद्यार्थी

विद्यार्थी से तात्पर्य हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्तर में अध्ययन करने वाले बालकों एवं बालिकाओं से है।

1.5.3 भारत

भारत से तात्पर्य, पौराणिक काल का ऐसा देश जहाँ शकुन्तला के पुत्र भरत ने जन्म लिया और अपना नाम दिया।

1.5.4 गौरवशाली

जो गौरव या महिमा से युक्त हो।

1.5.5 इतिहास

इतिहास शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के हिस्टोरिया से मानी जाती है जिसका अर्थ है ''जानना''।

इतिहास शब्द **'इतिहास'** इन तीन शब्दों के समन्वय से बना है, जिसका अर्थ है ऐसा निश्चित रूप से हुआ है अर्थात् सामान्य अर्थ में इतिहास से तात्पर्य अतीत काल की घटनाओं का लेखा-जोखा है।

1.5.6 जागरूकता

सामान्यता जागरूकता से अभिप्राय छात्रों में उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, नागरिक, राजनीतिक और राष्ट्रीय संदर्भों में स्वविवेक का प्रयोग करते हुए ऐसे कदम उठाने की क्षमता उत्पन्न करने से है जो उनकी समाज की एवं राष्ट्र की समृद्धि में सहायक तथा सर्वहितकारी हो।

1.5.7 अध्ययन

अध्ययन से तात्पर्य किसी विषय के सब अंगों या गूढ़ तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिये उसे देखने, समझने या पढ़ने की क्रिया।

1.5.8 बाँदा जनपद

भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश का एक ऐसा जिला जो महर्षि वामदेव की तपोभूमि है।

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

उद्देश्य एक पूर्व दर्शित लक्ष्य है जो किसी क्रिया को संचालित करता है अथवा व्यवहार को प्रेरित करता है। यदि लक्ष्य निश्चित तथा स्पष्ट होता है तो व्यक्ति अपने मंजिल को आसानी से प्राप्त कर लेता है। बिना उद्देश्य के हम जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते।

जब व्यक्ति को किसी उद्देश्य का स्पष्ट ज्ञान होता है तो उसके मन में दृढ़ता तथा आत्मबल जागृत हो जाता है, इससे वह एकाग्र होकर अपने कार्यों को पूरे उत्साह से करने लगता है।

बी.डी. भाटिया ने कहा है- **"उद्देश्य के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जिसे अपने लक्ष्य या मंजिल का ज्ञान नहीं तथा उसके विद्यार्थी उस पतवारविहीन नौका के समान है जो समुद्र की लहरों के थपेड़े खाती हुई किस तट की ओर बढ़ती जा रही है।"**

कार्टर वी. गुड ने लिखा है- **"उद्देश्य पूर्व निर्धारित साध्य है जो किसी कार्य या क्रिया का मार्गदर्शन करता है।"**

वर्तमान अनुसंधान के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं-

(1) बाँदा जनपद में माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

(2) बाँदा जनपद में C.B.S.E. Board के विद्यार्थियों का गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

(3) बाँदा जनपद के U.P. Board के विद्यार्थियों का गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

(4) C.B.S.E. Board एवं U.P. Board के विद्यार्थियों में गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.7 परिकल्पनाएँ

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है पूर्व चिंतन। यह अनुसंधान की प्रक्रिया का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्तम्भ है। परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है और न कोई वैज्ञानिक विधि से अनुसंधान ही सम्भव है। वास्तव में परिकल्पना के अभाव में अनुसंधान कार्य एक उद्देश्यहीन क्रिया है।

मैकग्यूगन (McGuigan; 1990) के अनुसार-

"दो या दो से अधिक चरों के बीच सम्भावित सम्बन्धों के बारे में बनाये गये जाँचनीय कथन को प्राक्कल्पना कहा जाता है।"

1. छात्र एवं छात्राओं के गौरवशाली इतिहास जागरूकता के प्राप्तांकों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. C.B.S.E. Board एवं U.P. Board के विद्यार्थियों में गौरवशाली जागरूकता के प्राप्तांकों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.8 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी शोध कार्य में किसी एक शोध समस्या के समग्र क्षेत्रों का विश्लेषण करना सम्भव नहीं है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन का निम्न प्रकार से सीमांकन किया गया है-

1. प्रस्तावित शोध अध्ययन केवल बाँदा जनपद में अतर्रा क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।

2. प्रस्तावित शोध अध्ययन में केवल U.P. Board एवं C.B.S.E. Board के माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।

3. प्रस्तावित शोध अध्ययन में केवल विद्यार्थियों के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता के स्तर को जानने का प्रयास किया गया है।

1.9 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

इतिहास के दर्पण में झाँकते ही हमारा अपना प्रतिबिम्ब मुखर हो उठता है। इतिहास की रेखायें हमारी वास्तविकता का दर्शन कराती है और बताते है कि हम क्या थे, हम क्या होंगे, इतिहास के आधार पर हम उस बीज तत्त्व की खोज कर लेते हैं जिसमें हमारा भावी समाज निर्मित होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो भारतीय शिक्षा का आरम्भ प्रकृति की गोद में मानवीय मूलभूत जिज्ञासा की शांति के लिए हुआ था। भारत में शिक्षा प्रणाली का प्रसार वैदिक युग से माना जाता है। वैदिक काल में गुरूकुल प्रणाली के आधार पर छात्रों को ब्रह्मचर का पालन कर शिक्षा प्राप्त करने की पद्धति थी। वैदिक युग से लेकर अब तक शिक्षा का अभिप्राय ज्ञान के स्रोतों के रूप में होता रहा है और वह जीवन के विविध क्षेत्रों में हमारा मार्ग आलोकित करता रहा है।

इस शोध अध्ययन का महत्त्व इसलिए आवश्यक है कि आज छात्रों में गौरवशाली इतिहास का अध्ययन कराया जाना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके ज्ञान से ही विश्व में शांति एवं सद्भाव लाया जा सकता है। प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च माध्यमिक स्तर तक छात्रों को गौरवशाली इतिहास विषय की अनिवार्यता रखनी होगी। यद्यपि आज के पाठ्यक्रम में नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत इसे सामाजिक अध्ययन विषय के रूप में महत्त्व दिया गया है जो कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण भी है।

इस शोध अध्ययन के द्वारा शोधकर्त्री का प्रयास यही है कि छात्र इसे सही ढंग से पढ़कर अपने जीवन में गौरवशाली इतिहास की घटनाओं से प्रेरणा प्राप्त कर सके और राष्ट्रीय एकता एवं इक्कीसवीं सदी के वैश्वीकरण में अपनी भूमिका निभा सके।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर) ने क्षेत्रीय 'हिन्दू' राजवंशों पर शोध से जुड़ी कुछ परियोजनाओं को मंजूरी दी है, परिषद के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों के मुताबिक यह फैसला इसलिए लिया गया क्योंकि भारतीय इतिहासकारों ने ऐसे अनुसंधानों की उपेक्षा की है और अब तक ज्यादातर अध्ययनों में मुगलकाल को प्रमुखता दी जाती रही है।

इतिहास लेखन हमेशा ही राजनीतिक विचारधाराओं से प्रभावित होता रहा है और इन परियोजनाओं की मंजूरी में छिपे संकेत समझना भी कोई मुश्किल बात नहीं है। भाजपा की अगुवाई वाली वर्तमान केन्द्र सरकार पहले ही यह साफ कर चुकी है कि वह भारत के गौरवशाली 'हिंदू' अतीत को उभारने पर ध्यान देगी। ताकि भ्रान्तियों के बदले सही जानकारियाँ इतिहास के पाठ्यक्रम में शामिल हो सकें।

द्वितीय अध्याय : सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 जागरूकता के सन्दर्भ में हुए शोध अध्ययन

2.3 अध्ययन से सम्बन्धित समाचार लेख

2.4 निष्कर्ष

2.1 प्रस्तावना

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों से है, जिनके अध्ययन से शोधकर्त्री को अपनी समस्या चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। अतीत, वर्तमान तथा भविष्य की दिशा निर्धारण का माध्यम है। अतीत के कृत्य भावी अध्ययन के लिए दिशा-निर्देशन का कार्य करते हैं। अनुभव विगत तथा वर्तमान कार्य की प्रकृति तथा प्रक्रिया की स्पष्टता को विकसित करने में सहायक होते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। नव शोधकर्त्री को इसके महत्त्व को समझना चाहिए।

गुड बार स्केट्स के अनुसार-

"योग्य चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, इसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोज से परिचित होना आवश्यक है।"

स्कॉट एवं वर्दीमर-

"सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से घिसी-पिटी समस्याओं पर शोधकर्त्री को व्यर्थ श्रम से मुक्ति मिल जाती है और उसे नई समस्याओं के समाधान हेतु इससे सहायता मिलती है।"

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का औचित्य

केवल संदर्भ ग्रन्थों की जानकारी प्राप्त कर लेना ही नहीं होता। सामग्री एवं सूचना के स्रोतों का ज्ञान प्राप्त करना तो अनुसंधान कार्य शृंखला की एक कड़ी है। मुख्य कार्य तो अपने अनुसंधान से सम्बन्धित सूचनाओं एवं सन्दर्भों को एकत्र करना होता है। इन स्रोत ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं आदि की कहाँ कितनी सूचनाएँ अपने अनुसंधान में उपयोगी है उन्हें निकालकर एकत्र करना तथा अनुसंधान प्रतिवेदन में यथा स्थान उनका प्रयोग करना सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण का वास्तविक औचित्य होता है, जो निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

1. चयनित पत्र-पत्रिकाओं एवं अन्य सम्बन्धित ग्रन्थों का अध्ययन।

2. महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक अंशों, विचार-बिन्दुओं एवं अन्य उपयोगी सामग्री का संक्षेप में अभिलेखन।

3. अन्त में समस्त अभिलिखित सामग्री का शोध-प्रबन्ध अथवा प्रतिवेदन में प्रयोग।

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का कार्य

शोधकर्त्री के लिये शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना तथा उसमें निहित विभिन्न सिद्धान्तों एवं धारणाओं को समझने में सहायता प्रदान करना है, जो निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट है-

1. सम्बन्धित क्षेत्र में जो व्यक्ति कार्यरत है उसके समझ उत्पन्न होने वाली समस्याओं का पता लगाना।

2. यह अनुसंधान कार्य के लिए आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि तैयार करता है तथा प्रत्येक प्रत्यय व धारणा को स्पष्ट करता है।

3. वर्तमान में तथा पिछले कुछ वर्षों में किन समस्याओं पर अनुसंधान किया गया है, ज्ञात करना।

4. अनुसंधान के लिए अपनायी जाने वाली विधि, प्रस्तुत उपकरण, आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रयोग में आने वाली, उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।

5. अनुसंधान कार्य को किस सीमा तक सरल व उपयोगी बनाया जा सकता है, इसका ज्ञान कराता है।

6. इसका मुख्य कार्य समस्या के सीमांकन और परिकल्पना निर्माण में सहायता करना है।

7. सम्बन्धित क्षेत्र में अनुसंधान किये जाने के मार्ग में आने वाली प्रमुख कठिनाइयों का पता लगाना।

2.2 जागरूकता के सन्दर्भ में हुये शोध अध्ययन

(1) **राव, भार्गव दिगमुरती (1995)** ने ''भावी शिक्षकों में जनसंख्या के प्रति जागरूकता स्तर का अध्ययन करना'' विषय पर शोध कार्य किया।

प्रमुख शोध उद्देश्य में भावी शिक्षकों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता स्तर को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ है कि केवल लिंग के आधार पर जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता में अंतर है अन्य कोई भी चर जैसे-रहने का स्थान, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति, परिवार का प्रकार (एकल या संयुक्त) आय आदि जनसंख्या जागरूकता को प्रभावित नहीं करते हैं।

(2) **भट्टाचार्य, जी.सी. (1996)** ने ''वाराणसी में प्राथमिक कक्षाओं की छात्राओं व उनके अभिभावकों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन'' विषय में शोध कार्य किया।

उपरोक्त शोध कार्य के शोध उद्देश्यों में वाराणसी में तृतीय और पंचम कक्षाओं में पढ़ने वाली छात्राओं और इनके अभिभावकों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर ज्ञात करना था। अनुसंधानकर्ता ने न्यादर्श में कक्षा तृतीय के 110 लड़के व 180 लड़कियाँ तथा कक्षा पंचम के 91 लड़के व 89 लड़कियाँ व उनके 269 अभिभावक पाँच विद्यालयी वर्गों के अन्तर्गत चयन किए। सिंह और राव द्वारा प्रयोग किया गया पर्यावरणीय जागरूकता मापनी उपकरण के रूप में आँकड़ों के संकलन हेतु प्रयोग किया गया।

शोध निष्कर्ष में पाया गया कि कक्षा तृतीय व पंचम के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता के उन्मुखीकरण, अभिवृत्ति और उत्तरदायित्व संबंधी कारकों के संबंध में कोई भेद नहीं पाया गया। कक्षा तृतीय व पंचम के छात्राओं व उनके अभिभावकों में पर्यावरणीय जागरूकता में सह-संबंध सार्थक पाया गया।

(3) **अग्रवाल, प्रदीप कुमार (2002)** ने ''माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में चल रही जनसंख्या शिक्षा के प्रति अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के ज्ञान एवं अभिवृत्ति और अभिभावकों की जागरूकता का विभिन्न संगठनों द्वारा किये जाने वाले विविध प्रयासों के संदर्भ में'' विषय पर शोध कार्य किया गया।

उपरोक्त शोध कार्य के शोध उद्देश्य में जनसंख्या शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों के ज्ञान एवं अभिवृत्ति की जागरूकता का अध्ययन करना था।

प्रस्तुत शोध निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में जबलपुर जिले के 200 विद्यार्थी, 100 अध्यापक तथा 100 अभिभावकों का चयन किया गया। आँकड़ों

के संकलन हेतु आर. सुब्बाराव द्वारा निर्मित अभिवृत्ति मापनी, बी. मंजुला द्वारा निर्मित जागरूकता परीक्षण और स्वनिर्मित जनसंख्या शिक्षा ज्ञान परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्रमुख निष्कर्षों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति शहरी क्षेत्र के लड़के और लड़कियों के ज्ञान में कोई अंतर नहीं पाया गया, जबकि ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को जनसंख्या शिक्षा के प्रति अच्छा ज्ञान था।

(4) **जे0 जिना0 जेम्स (2004)** ने ''प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थियों के जल-प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया।

प्रमुख शोध उद्देश्यों में छात्र तथा छात्राओं में जल-प्रदूषण की जागरूकता में अंतर का अध्ययन करना था। तमिल तथा मलयालम माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों में जल-प्रदूषण की जागरूकता के विकास के अंतर का अध्ययन करना था।

शोधकर्त्ता ने शोध निष्कर्ष में पाया कि छात्रों व अभिभावकों को साथ लेकर जल प्रदूषित क्षेत्रों का भ्रमण करवाया गया। छात्रों की जल प्रदूषण की जागरूकता का इन क्रियाकलापों से पहले तथा बाद में परीक्षण किया गया पूर्व-परीक्षण तथा पश्च-परीक्षण के आँकड़ों की तुलना टी-टेस्ट के द्वारा ज्ञात की गई। इस अध्ययन से जो निष्कर्ष निकले दर्शाते हैं कि समूह चर्चा, क्षेत्र भ्रमण के बाद सभी छात्रों की जल प्रदूषण की जागरूकता में पर्याप्त वृद्धि हुई। लड़के तथा लड़कियों में जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा जल प्रदूषण की जागरूकता का सीखने के माध्यम से कोई सम्बन्ध नहीं है।

(5) **कुमार, आर0 कृष्णा (2006)** ने ''वनारोपण के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन'' विषय में शोध कार्य किया।

शोध उद्देश्यों में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर के छात्रों में लिंग, विषय समूह, अभिभावक शिक्षा, विद्यालयों के प्रकार तथा स्थिति को लेकर वनारोपण के प्रति जागरूकता तथा अन्य आयामों को लेकर अंतर का अध्ययन करना था।

शोध निष्कर्ष में पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर के छात्रों में अलग-अलग चरों के आधार पर (लिंग, विषय समूह, अभिभावक शिक्षा, विद्यालयों के प्रकार तथा

स्थिति) को लेकर वनारोपण तथा इसके विभिन्न आयामों के प्रति जागरूकता में अंतर प्राप्त किया गया। जिसके अन्तर्गत विषयों के समूह को लेकर कला वर्ग के छात्रों में विज्ञान तथा अन्य विषयों के छात्रों की अपेक्षा जागरूकता अधिक पायी गयी। अभिभावक शिक्षा, व्यावसायिक समूह छात्रों पर ज्यादा प्रभावी दिखायी देती हैं। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में शहरी क्षेत्र के विद्यालयों की अपेक्षा जागरूकता ज्यादा पायी गयी।

(6) **सिंह, ओम (2014)** ने ''परिषदीय प्राथमिक विद्यालय और निजी प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों का गृह सीखना वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया।

प्रस्तुत शोध कार्य का प्रमुख शोध उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित परिषदीय प्राथमिक तथा निजी प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में गृह सीखना वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना था।

शोधकर्त्ता ने न्यादर्श के रूप में कुल 400 छात्रों का पश्चिमी उ.प्र. के पाँच जनपदों में से प्रत्येक जनपद से आठ-आठ विद्यालयों का जिसमें ग्रामीण और शहरी दोनों सम्मिलित थे, का चयन किया गया।

शोध निष्कर्ष में पाया गया कि परिषदीय प्राथमिक विद्यालय तथा निजी प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में गृह सीखना वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक जागरूकता को लेकर किसी प्रकार का अंतर नहीं पाया गया। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित परिषदीय प्राथमिक विद्यालय एवं निजी प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में गृह सीखना वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि (विशेषकर गणित में) तथा शैक्षिक जागरूकता को लेकर टी-मूल्य परीक्षण के पश्चात् शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए किसी प्रकार का अंतर नहीं पाया गया।

(7) **आर0, हेमलता (2015)** ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में गणित विषय में संज्ञानात्मक जागरूकता एवं समस्या समाधान योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय में शोध कार्य किया।

जिसमें शोध उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में गणित विषय में संज्ञानात्मक जागरूकता एवं समस्या समाधान योग्यता के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का पता लगाना तथा ग्रामीण शहरी के आधार पर अंतर पता करना था।

शोध निष्कर्ष में पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संज्ञानात्मक जागरूकता एवं समस्या समाधान योग्यता को लेकर अंतर पाया जाता है। छात्र-छात्राओं में लैंगिक आधार पर भी गणित विषय के संज्ञानात्मक जागरूकता एवं समस्या समाधान योग्यता को लेकर अंतर पाया जाता है। ग्रामीण एवं शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों में संज्ञान में कोई अंतर नहीं पाया गया। जबकि संज्ञानात्मक एवं समस्या समाधान योग्यता को लेकर ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में अंतर पाया गया, जबकि सरकारी, गैर-सरकारी मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों को लेकर किसी प्रकार का अंतर नहीं पाया गया।

(8) **गुप्ता, विवेक (2015)** ''प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के अध्यापकों, अध्यापिकाओं में निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2005 के प्रति जागरूकता का अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया।

जिसमें शोध उद्देश्य प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के अध्यापकों में शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना था।

शोध निष्कर्ष में पाया गया कि ग्रामीण व शहरी विद्यालय के अध्यापकों में निःशुल्क और अनिवार्य बालक शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति जागरूकता के अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं है, लेकिन शहरी अध्यापकों की अपेक्षा ग्रामीण अध्यापकों में जागरूकता संवैधानिक आयाम के प्रति सकारात्मक एवं उच्च है। ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के अध्यापकों में निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति जागरूकता के अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं है। लेकिन शहरी अध्यापकों की अपेक्षा ग्रामीण अध्यापकों में जागरूकता प्रवेश प्रक्रिया आयाम के प्रति सकारात्मक एवं उच्च है। ग्रामीण विद्यालय के अध्यापकों की अपेक्षा शहरी अध्यापकों में जागरूकता माता-पिता के कर्तव्य आयाम के प्रति सकारात्मक एवं उच्च है। शहरी विद्यालयों के अध्यापकों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यालयों के

अध्यापकों में जागरूकता विद्यालय प्रबन्ध समिति आयाम के प्रति सकारात्मक एवं उच्च है। शहरी अध्यापकों की अपेक्षा ग्रामीण अध्यापकों में जागरूकता समस्त आयामों के प्रति सकारात्मक एवं उच्च है।

2.3 अध्ययन से सम्बन्धित समाचार लेख

- **सुरेश हिन्दुस्थानी (2014)** - हमें याद रखना होगा कि हमारा अतीत अत्यन्त गौरवशाली है उसी गौरवशाली राह पर चलकर ही हम पुनः विश्व गुरू के सिंहासन पर पदासीन हो सकते है। वर्तमान में हम जो इतिहास पढ़ते है, वह भारत का इतिहास है ही नहीं। क्योंकि हमारे गौरवशाली अतीत के बारे में सही जानकारी के पृष्ठ गायब कर दिये गये। गौरवशाली पन्नों को नष्ट करने की कोशिश इसलिये की गयी, जिससे भावी पीढ़ी में अपने अतीत के प्रति हीन भावना पैदा हो, और ऐसा हुआ भी है।

  अतः हमें अपने गौरवशाली इतिहास को फिर से जगाना होगा जिससे आज की नई पीढ़ी में पाश्चात्य संस्कृति के प्रति जो आकर्षण पैदा हुआ है, वो समाप्त हो सके और वे अपने देश के इतिहास से गौरवान्वित हो सके।

- **डा0 साकेत (2014)** - इन्होंने सेमिनार में सम्बोधित किया, शिक्षक नेतृत्वकर्ता होते है त्याग के साथ सरल, सहज व विषयों को आनंददायक बनाकर बढ़ाने से लाभ होगा। हमारे देश का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली है, गणित और विज्ञान के उद्भव में प्राचीन भारत का योगदान अग्रणी है। जब संसार अज्ञानता रूपी अंधकार में था, तब भारत में गणित का प्रकाश फैल रहा था। लेकिन आज की युवा पीढ़ी अपने देश के इतिहास से अनभिज्ञ है। अतः आज गौरवशाली इतिहास को फिर से सार्थक बनाने के लिये पहल की जरूरत है।

- **कुलेश (2014)** - कलेक्टर बीएस कुलेश ने बैतूल में आयोजित विश्व आदिवासी दिवस कार्यक्रम में कहा कि धर्म, परम्पराएँ सभ्यता पर समझौत नहीं करना चाहिये। अपने मान, सम्मान और स्वाभिमान के प्रति सजग होकर विलुप्त होते हुए गौरवशाली इतिहास को पुनर्जीवित करना चाहिये।

- **ईश्वरलाल (2016) -** इन्होंने दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग में बालिकाओं को सम्बोधित किया और भारत के गौरवशाली अतीत पर प्रकाश डालते हुये कहा कि अनेक आविष्कारों के जनक भारतीय वैज्ञानिक है। महर्षि भारद्वाज के विमान शास्त्र, पाइथागोरस का प्रमेय, आर्यभट्ट द्वारा शून्य का आविष्कार, धनवंतरि का आयुर्वेद, पतंजलि के योग शास्त्र को विश्व के लिये अमूल्य योगदान बताया।

  अतः दुर्गावाहिनी शाखाओं के माध्यम से हमारे गौरवशाली अतीत को जानकर हमें आत्मगौरव की अनुभूति होनी चाहिए और गौरवशाली इतिहास को पुनर्जीवित करना चाहिये।

- **राजीव दीक्षित (2015) -** इन्होंने कहा हम आए दिन विदेशियों के कुत्सित प्रचार और मीडिया के पारवंडपूर्ण रवैये की वजह से अपने गौरवशाली अतीत को कोसते रहते है। जबकि हकीकत ये है कि भारत का अतीत जितना समृद्ध और गौरवशाली रहा है वहाँ तक पहुँचने के बारे में दुनिया का कोई देश सोंच भी नहीं सकता है। इसलिये शोधपूर्ण कार्यों से भारत के गौरवशाली इतिहास को पुनर्जीवित करना चाहिये।

- **जे0 नंदकुमार जी0 (2019) -** इन्होंने कहा कि राष्ट्रीय विचारों से भारतीय समाज को एकजुट बनाये रखने का सबसे बेहतर माध्यम पुस्तक है। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में गौरवशाली इतिहास पाठ्यक्रम से नदारद है। जिससे आज के छात्र अनभिज्ञ है, इसलिये पाठ्यक्रम में बदलाव कर भारत का प्राचीन गौरवशाली इतिहास छात्रों को पढ़ाने की आवश्यकता है।

- **डा0 आनन्द वर्धन (2015) -** इन्होंने भारतीय मजदूर संघ कार्यालय (दिल्ली) के सभागार में गौरवशाली इतिहास विषय पर एक मीडिया गोष्ठी का आयोजन किया गया और कहा कि राजाओं का शासन, युद्ध आक्रांताओं का आगमन ही महज इतिहास नहीं है। अपितु नारी विमर्श, विज्ञान तकनीकी भी इतिहास है। इस क्रम में इन्होंने आर्यभट्ट से लेकर सुश्रुत तथा राजा चोल के समुद्री अभियानों की भी चर्चा की गयी और इतिहास के गौरवशाली पृष्ठों को पुनर्जीवित करने की पहल की गयी।

2.4 निष्कर्ष

जागरूकता स्तर पर पर्यावरण जागरूकता एवं जल प्रदूषण के प्रति जागरूकता तथा वनारोपण के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की जागरूकता विषय पर शोधकार्य किया जा चुका है। लेकिन माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है, इसको ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में इतिहास विषय के प्रति जागरूकता की समस्या, शोधकर्त्री के समक्ष सदा प्रश्न चिन्ह बनकर प्रस्तुत हुई है। क्योंकि शोधकर्त्री स्वयं इतिहास विषय की छात्रा रही है और उसने अनुभव किया कि माध्यमिक स्तर पर विशेषकर 9वीं एवं 10वीं कक्षा में सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत इतिहास विषय एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है इसके बावजूद इन विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं में मूलभूत ऐतिहासिक जागरूकता का अभाव पाया गया है। उनके समुचित कारणों हेतु शोधकर्त्री ने इस विषय का चयन किया एवं उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई, क्योंकि इस विषय पर कोई शोध कार्य शोधकर्त्री को प्राप्त नहीं हुआ है।

तृतीय अध्याय : चयनित गौरवशाली गाथाएँ

3.1 भूमिका

किसी देश की वास्तविकता जानना हो तो उस देश के महापुरुषों का अध्ययन करने से हमें उस सच का पता चलता है, जो उस देश की मूल अवधारणा में समाहित होता है। लेकिन यह भारत का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि भारत के परम भक्त महाराणा प्रताप पर हमला करने वाले विदेशी आक्रमणकारी मुगल शासक अकबर को महान बताने की भूल की जाती है, इसी प्रकार हम सबके आराध्य भगवान श्रीराम की पावन भूमि को तहस नहस करने का साहस करने वाले बाबर का इस देश में सम्मान किया जाता है। विश्व के अनेक देशों ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद अपने पुराने स्वर्णित रूप को फिर से जिंदा करके उसे राष्ट्रीय गौरव के रूप में मान्यता दी, लेकिन हमारे भारत में क्या हो रहा है, हम और हमारे देश के निर्धारक माने जाने वाले नेता पश्चिम की धारा का अनुशरण करके नीतियाँ बनाने लगे, हम जानते हैं कि जो देश अपने पूर्वजों द्वारा बनाई राह से लज्जित होने लगे उस देश को समाप्त होने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती, हमें याद रखना होगा कि हमारा अतीत अत्यन्त गौरवशाली है, उसी गौरवशाली राह पर चलकर ही हम पुनः विश्व गुरू के सिंहासन पर पदासीन हो सकते हैं।

वास्तव में यह सत्य है कि वर्तमान में हम जो इतिहास पढ़ते हैं, वह भारत का इतिहास है ही नहीं। भारत के सच्चे इतिहास की जानकारी के लिए हमको अंग्रेजों और मुगलों के शासन से पूर्व की जानकारी प्राप्त करनी होगी, क्योंकि वास्तविकता में वही भारत का इतिहास है। उस काल में हमारा भारत देश इतना समृद्ध था कि सारे देश भारत से कुछ न कुछ सीखने की मंशा रखते थे। भारत पूरी तरह से हिन्दू राष्ट्र ही था। हिन्दू जीवन पद्धति को अंगीकार करने वाली यहाँ की संतति के पास विश्व को दिशा देने वाला ज्ञान विद्यमान था। इतिहास के गौरवशाली पन्नों को नष्ट करने की कोशिष की, जिससे भावी पीढ़ी में अपने अतीत के प्रति हीन भावना पैदा हो। गलत इतिहास पढ़ाने का बुरा प्रभाव यह हुआ कि नई पीढ़ी में पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षण पैदा हुआ और अपने स्वयं के प्रति हीन भावना पैदा हुयी। इन्हीं कमजोरियों से अवगत कराने के लिये शोधकर्त्री ने चयनित गौरवशाली गाथायें ली है, जो भारत का गौरवशाली इतिहास होते हुये भी पाठ्यक्रम का अंग नहीं है। इसलिये माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी इनसे अनभिज्ञ है अतः हम सर्वप्रथम चयनित गाथाओं की सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और गौरवशाली पृष्ठभूमि को समझते है।

3.2 हाडा रानी का त्याग



चित्र सं0-3.1

आज हम आपको राजस्थान के इतिहास की उस घटना के बारे में बताते है। यह आज तक के इतिहास में एक पत्नी के द्वारा अपने पति को उसका फर्ज याद दिलाने के लिए किया गया सबसे बड़ा बलिदान है। यह **रानी बूंदी के हाडा** शासक की बेटी थी और उदयपुर (मेवाड़) के सलुम्बर ठिकाने के **रावत चुण्डावत** की रानी थी। इतिास में यह हाडा रानी के नाम से प्रसिद्ध है। शादी को महज एक सप्ताह हुआ था। न हाथों की मेंहदी छूटी थी और न ही पैरों का आलता। सुबह का समय था। हाड़ा सरदार गहरी नींद में थे। रानी सज धजकर राजा को जगाने आई। इस बीच दरबान आकर वहां खड़ा हो गया। हाडा सरदार ने दरबान से कहा। अरे शार्दूल तू! इतनी सुबह कैसे? उसने हाड़ा सरदार के हाथों में **राणा राज सिंह** का पत्र थमा दिया। राणा का उसके लिए संदेश था। पत्र में लिखा था।

वीरवर! अविलंब अपनी सैन्य टुकड़ी को लेकर औरंगजेब की सेना को रोको। मुसलमान सेना उसकी सहायता को आगे बढ़ रही है। इस समय औरंगजेब को मैं घेरे हुए हूँ। उसकी सहायता को बढ़ रही फौज को कुछ समय के लिए उलझाकर रखना है तब तक मैं पूरा काम निपट लेता हूँ। तुम इस कार्य को बड़ी कुशलता से कर सकते है। एक क्षण का भी विलंब न करते हुए हाड़ा सरदार ने अपने सैनिकों को कूच करने का आदेश दे दिया था। अब वह पत्नी से अंतिम विदाई लेने के लिए उसके पास पहुंचा था। केसरिया बाना पहने युद्ध वेष में सजे पति को देखकर हाड़ी रानी चौंक पड़ी वह अचंभित थी। कहां चले स्वामी? इतनी जल्दी। अभी तो आप कह रहे थे कि चार छह महीनों के लिए युद्ध से फुरसत मिली है आराम से कटेगी यह क्या? मुझे यहां से अविलंब निकलना है। हंसते-हंसते विदा दो। पता नहीं फिर कभी भेंट हो या न हो हाड़ा सरदार ने मुस्करा कर पत्नी से कहा। हाड़ा सरदार का मन आशंकित था। सचमुच ही यदि न लौटा तो। मेरी इस अर्धांगिनी का क्या होगा? एक ओर कर्तव्य और दूसरी ओर था पत्नी का मोह। इसी अंतर्द्वंद में उसका मन फंसा था। उसने पत्नी को राणा राज सिंह के पत्र के संबंध में पूरी बात विस्तार से बता दी थी। विदाई मांगते समय पति का गला भर आया है यह हाड़ा रानी की तेज आंखों से छिपा न रह सका। हताश मन व्यक्ति को विजय से दूर ले जाता है। उस वीर बाला को यह समझते देर न लगी कि पति रणभूमि में तो जा रहा है पर मोहग्रस्त होकर। चलते चलते

पति उससे बोला प्रिय। मैं तुमको कोई सुख न दे सका, बस इसका ही दुख है मुझे भूल तो नहीं जाओगी? यदि मैं न रहा तो ....। उसके वाक्य पूरे भी न हो पाए कि हाड़ा रानी ने उसके मुख पर हथेली रख दी। न न स्वामी। ऐसी अशुभ बातें न बोलों। मैं वीर राजपूतनी हूं, फिर वीर की पत्नी भी हूं। अपना अंतिम धर्म अच्छी तरह जानती हूं आप निश्चित होकर प्रस्थान करें। देश के शत्रुओं के दांत खट्टे करें। यही मेरी प्रार्थना है। हाड़ा सरदार अपनी सेना के साथ हवा से बाते करता उड़ा जा रहा था। किन्तु उसके मन में रह रह कर आ रहा था कि कहीं सचमुच मेरी पत्नी मुझे बिसार न दें? वह मन को समझाता पर उसका ध्यान उधर ही चला जाता। अंत में उससे रहा न गया। उसने आधे मार्ग से अपने विश्वस्त सैनिकों के रानी के पास भेजा। उसको फिर से स्मरण कराया था कि **मुझे भूलना मत। मैं जरूर लौटूंगा।**

संदेश वाहक को आश्वस्त कर रानी ने लौटाया। दूसरे दिन एक और वाहक आया। फिर वही बात। तीसरे दिन फिर एक आया। इस बार वह पत्नी के नाम सरदार का पत्र लाया था। **प्रिय मैं यहां शत्रुओं से लोहा ले रहा हूँ। अंगद के समान पैर जमारक उनको रोक दिया है। मजाल है कि वे जरा भी आगे बढ़ जाएं। यह तो तुम्हारे रक्षा कवच का प्रताप है। पर तुम्हारे बडी याद आ रही है। पत्र वाहक द्वारा कोई अपनी प्रिय निशानी अवश्य भेज देना।** हाड़ी रानी पत्र को पढ़कर सोच में पड़ गयीं। युद्धरत पति का मन यदि मेरी याद में ही रमा रहा उनके नेत्रों के सामने यदि मेरा ही मुखड़ा घूमता रहा तो वह शत्रुओं से कैसे लड़ेंगे। उसके मन में एक विचार कौधा। वह सैनिक से बोली वीर? मैं तुम्हें अपनी अंतिम निशान दे रही हूं। इसे ले जाकर उन्हें दे देना। किन्तु इसे कोई और न देखे। वे ही खोल कर देखें। साथ में मेरा यह पत्र भी दे देना। हाड़ी रानी के पत्र में लिखा था **प्रिय! मैं तुम्हें अपनी अंतिम निशानी भेज रही हूँ। तुम्हारे मोह के सभी बंधनों को काट रही हूँ। अब बेफ्रिक्र होकर अपने कर्तव्य का पालन करें मैं तो चली.... स्वर्ग में तुम्हारी बाट जोहूंगी।** पलक झपकते ही हाड़ी रानी ने अपने कमर से तलवार निकाल, एक झटके में अपने सिर को उड़ा दिया। सिपाही के नेत्रों से अश्रुधारा बह निकली। कर्तव्य कर्म कठोर होता है सैनिक ने स्वर्ण थाल में हाड़ी रानी के कटे सिर को सजाया। सुहाग के चूनर से उसको ढका। भारी मन से युद्ध भूमि की ओर दौड़ पड़ा। हाड़ा सरदार बोला क्यों यदु सिंह। रानी की निशानी ले आए? यदु ने कांपते हाथों से थाल उसकी ओर बढ़ा दिया। हाड़ा सरदार फटी आंखों से पत्नी

का सिर देखता रह गया। उसके मुख से केवल इतना निकला उफ हाय रानी। तुमने यह क्या कर डाला। संदेही पति को इतनी बड़ी सजा दे डाली खैर। मैं भी तुमसे मिलने आ रहा हूँ।

3.3 जूनागढ़ के रामनाथ अहीर का समर्पण



चित्र सं0-3.2

पन्नाधाय की कहानी तो आप सब जानते ही हो जो कि मेवाड़ के राजकुमार उदय सिंह की धाय माँ थी और जिसने उदय सिंह की जान बचाने के लिए अपने पुत्र चन्दन का बलिदान दे दिया था। लेकिन इतिहास में एक ऐसी कहानी और है जिसे बहुत कम लोग जानते हैं। आज हम आपको वही कहानी बता रहे हैं। उन दिनों जूनागढ़ के राजा **राव महिपाल सिंह** थे। वे जितने साहसी थे उतने ही प्रजावत्सल। उनकी न्यायप्रियता एवं कुशल प्रशासन की ख्याति अन्य राज्यों में भी फैल चुकी थी। परन्तु समय की यह परिवर्तनशीलता जूनागढ़ राज्य पर भी आ पहुँची और पाटन के राजा ने वहाँ आक्रमण कर किया। राव महिपाल सिंह अपने सैनिकों के साथ शत्रुसेना का सामना करने के लिए युद्ध भूमि में पहुँचे। शत्रुसेना संख्या से अधिक थी। वीरता का परिचय दिया, पर शत्रुसेना पर विजय ने प्राप्त कर सके और वीरगति को प्राप्त हुये।

शत्रुसेना विजय की पताका फहराती राव के राजमहल में गयी, वहाँ **अल्पवयस्क राजकुमार नौघण** और **महारानी महामाया** चिंतातुर बैठे थे। अकस्मात् मंत्री **धर्मदेव** को अपने कर्तव्य की पुकार सुनाई थी। उसने अपने प्राणों की बाजी लगाकर राजकुमार और महारानी को गुप्तमार्ग द्वारा महल से बाहर निकला और अपने साथ वह उन्हें लेकर गिरनार के जंगल में पहुँच गया। गिरनार के जंगलों में बसे एक छोटे से गाँव विजयपुर में उसने दोनों को एक अहीर के मकान में छिपा दिया।

अहीर का नाम **रामनाथ** था। उसने मंत्री की चिंता दूर करते हुए प्राणपण से राजकुमार नौघण और महारानी की रक्षा करने का वचन दिया। महामंत्री निश्चिन्त होकर वहाँ से चले गए। लेकिन दुर्योग से बीच में ही वह शत्रुसेना के हाथों में फस गए। सेनापति ने उनसे पूछा बताओ राजकुमार नौघण और महारानी कहाँ पर है?

महामंत्री ने बताने से इंकार कर दिया। अंत में सेनापति ने उन्हें तलवार से मौत के घाट उतार दिया। एक दिन जूनागढ़ के सेनापति को ज्ञात हुआ कि राजकुमार नौघण और महारानी महामाया गिरनार के जंगलों में स्थित एक गाँव में किसी अहीर के यहाँ छिपे है। वह तुरंत अपने सैनिकों के साथ वहाँ गया

और गाँव को घेर लिया। सेनापति ने अहीर रामनाथ को राजकुमार और महारानी को अपने सुपुर्द करने को कहा। अहीर रामनाथ ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। रामनाथ को तुरंत अपने धर्म और वचन का स्मरण हो आया। तो उसने दहाड़ते हुए स्पष्ट शब्दों में पत्नी को आदेश दिया कि - जा देख क्या रही है राजकुमार नौघण को शीघ्र यहाँ ले आओ। चतुर अहीर की पत्नी ने न केवल पति का वास्तविक संकेत समझ लिया था अपितु, भीतर राजभक्ति की लहरे भी हिलोरे लेने लगी थी। उसने अपने इकलौते पुत्र को राजकुमार के वस्त्र पहनाकर सेनापति के समक्ष उपस्थित किया।

बलिदानी माता-पिता का बेटा भी बलिदान की भावना से ओत-प्रोत था। सेनापति के पूछने पर दस वर्षीय अहीर पुत्र ने अपना परिचय राजकुमार नौघण के रूप में दिया। निर्दयी सेनापति ने उसी क्षण माता-पिता के सामने उस वीर बालक का वध कर डाला, खून का घूट पीकर भी माता-पिता शांत बने रहे। किसी के नेत्रों से एक भी आंसू नहीं गिरा। सेनापति व उसके सैनिक अपना दुष्कर्म पूराकर चले गए, तो अहीर व उसकी पत्नी के धैर्य का बाँध टूट गया। वे दहाड़े मारकर रोने लगे। छाती से चिपटाया पुत्र का शव वे किसी भी रूप में दूर नहीं कर पा रहे थे, परन्तु वे उस बात से गर्वित थे कि उन्होंने अपने देश के राजकुमार की सत्यधर्म से रक्षा की। अहीर की पत्नी ने पन्नाधाय का उदाहरण दुहरा दिया।

3.4 किरण देवी की वीरता



चित्र सं0-3.3

आज हम आपको एक ऐसी ही ऐतिहासिक कहानी बताएगें जब एक राजपूत वीरांगना 'किरण देवी' ने अकबर को अपने प्राणों की भीख मांगने पर मजबूर कर दिया था। अकबर प्रतिवर्ष दिल्ली में नौरोज के मेले का आयोजन करता था, जिसमें वह सुंदर युवतियों को खोजता था, और उनसे अपने शरीर की भूख शांत करता। एक बार अकबर नौरोज के मेले में बुरका पहनकर सुंदर स्त्रियों की खोज कर ही रहा था, कि उसकी नजर मेले में घूम रही किरण देवी पर जा पड़ी। किरण देवी मेवाड़ के महाराणा प्रताप सिंह के छोटे भाई शक्ति सिंह की पुत्री थी और उसका विवाह बीकानेर के प्रसिद्ध राजपूत वंश में उत्पन्न **पृथ्वीराज राठौर** के साथ हुआ था।

अकबर ने बाद में किरण देवी का पता लगा लिया कि यह तो अपने ही सेवक की बीबी है, तो उसने पृथ्वीराज राठौर को जंग पर भेज दिया और किरण देवी को अपनी दूतियों के द्वारा, बहाने से महल

में आने का निमंत्रण दिया। अब किरण देवी पहुंची अकबर के महल में, तो स्वागत तो होना ही था और इन शब्दों में हुआ, ''हम तुम्हें अपनी बेगम बनाना चाहते हैं।'' कहतो हुआ अकबर आगे बढ़ा, तो किरण देवी पीछे को हटी...अकबर आगे बढ़ते गया और किरण देवी उल्टे पांव पीछे हटती गयी।

अकबर मुस्कुराया, ''ऐसा मौका फिर कब मिलेगा, तुम्हारी जगह पृथ्वीराज के झोंपड़ा में नहीं हमारा ही महल में है'' ''हे भगवान,'' किरण देवी ने मन-ही-मन में सोचा, ''इस राक्षस से अपनी इज्जत आबरू कैसे बचाऊ?'' और निसहाय बनी धरती की ओर देखने लगी, तभी उसकी नजर कालीन पर पड़ी। उसने कालीन का किनारा पकड़कर उसे जोरदार झटका दिया।

उसके ऐसा करते ही अकबर जो कालीन पर चल रहा था, पैर उलझने पर वह पीछे को सरपट गिर पड़ गया, ''या अल्लाह!'' उसके इतना कहते ही किरण देवी को संभलने का मौके मिल गया और वह उछलकर अकबर की छाती पर जा बैठी और अपनी आंगी से कटार निकालकर उसे अकबर की गर्दन पर रखकर बोली, अब बोलो शहंशाह, तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है? किसी स्त्री से अपनी हवश मिटाने की या कुछ और?'' एकांत 'महल में गर्दन से सटी कटार को और क्रोध में दहाड़ती किरण देवी को देखकर अकबर भयभीत हो गया।

''मुझे माफ कर दो दुर्गा माता'', मुगल सम्राट अकबर गिड़गिड़ाया, ''तुम निश्चय ही दुर्गा हो, मैं तुमसे प्राणों की भीख माँगता हूँ। मुझे क्षमा कर दो, हिन्दुओं के धर्म के दस लक्षणों में क्षमा भी एक है, इसलिए तुम्हें तुम्हारे धर्म की कसम, मुझे अपनी माँ समझकर क्षमा कर दो।'' किरण देवी फिर गरजी। पापी अपनी तुलना हमारी पवित्र गौ से मत करो,'' फिर वह थोड़ी सी नरम पड़ गयी, ''यदि तुम आज अपनी मौत और मेरी कटारी के बीच में धर्म और गाय को नहीं लाते तो मैं सचमुख् तुम्हें मारकर धमकी का भार हल्का कर देती।'' फिर चेतावनी देते हुए बोली, ''आज भले ही सारा भारत तुम्हारे पांवों पर शीश झुकाता हो? किन्तु मेवाड़ का सिसोदिया वंश आज भी अपना सिर ऊँचा किए खड़ा है। मैं उसी राजवंश की कन्या हूँ। मेरी धमनियों में बप्पा रावल और राणा सांगा का रक्त बह रहा है। हम राजपूत रमणियों अपने प्राणों से अधिक अपनी मर्यादा को मनाती हैं और उसके लिए मर भी सकती हैं और मार भी सकती है।

यदि तू आज बचना चाहता है तो अपनी माँ और कुरान की सच्ची कसम खाकर प्रतिज्ञा कर कि आगे से नौरोज मेला नहीं लगाएगा और किसी महिला की इज्जत नहीं लूटेगा। यदि तुझे यह स्वीकार नहीं

है, तो मैं अभी तेरे प्राण ले लूंगी, भले ही तूने हिन्दू धर्म और माँ की दुहाई दी हो। मुझे अपनी मृत्यु का भय नहीं है।

अकबर को वास्तव में अनुभव हुआ कि तु मुत्यु के पाश में जकड़ा जा चुका है। उसने माँ की कसम खाकर किरण देवी की बात को मान लिया, मुझे मेरी माँ की सौगंध, मैं आज से संसार की सब स्त्री जाति को अपनी बेटी समझूँगा और किसी भी स्त्री के सामने आते ही मेरा सिर झुका जाएगा, भले ही कोई नवजात कन्या भी हो और कुरान-ए-पाक की कसम खाकर कहता हूँ कि आज ही नौरोज मेला बंद कराने का फरमान जारी कर दूँगा।''

3.5 जैत सिंह चुण्डावत का पराक्रम



चित्र सं0-3.4

आज हम आपको राजपूती वीरता का एक और किस्सा बताएंगे। इस किस्से में मेवाड के महाराणा अमर सिंह की सेना के दो राजपूती दस्तों (रेजिमेंट) ''चुण्डावत'' और ''शक्तावत'' में अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए एक मुकाबला होता है। मेवाड के महाराणा अमर सिंह की सेना में विशेष पराक्रमी होने के कारण ''चुण्डावत'' खांप के वीरों को ही ''हरावल'' (युद्ध भूमि में अग्रिम पंक्ति) में रहने का गौरव प्राप्त था। किन्तु ''शक्तावत'' खांप के वीर राजपूत भी कम पराक्रमी नहीं थे। उनके हृदय में भी यह परमान जागृत हुआ कि युद्ध क्षेत्र में मृत्यु से पहला मुकाबला हमारा होना चाहिए। अपनी इस महत्वाकांक्षा को महाराणा अमर सिंह के समक्ष रखते हुए शक्तावत वीरों ने कहा कि हम चुंडावतों से त्याग, बलिदान व शौर्य में किसी भी प्रकार कम नहीं है। अतः हरावल में रहने का अधिकार हमें मिलना चाहिए।

इसका निर्णय करने के लिए महाराणा ने कसौटी तय की, जिसके अनुसार यह निश्चित किया गया कि दोनों दल उन्टाला दुर्ग (जो कि बादशाह जहाँगीर के अधीन था और फतेहपुर का नवाब समस खां वहां का किलेदार था) पर प्रथक-प्रथक दिशा से एक साथ आक्रमण करेंगे व जिस दल का व्यक्ति पहले दुर्ग में प्रवेश करेगा उसे ही हरावल में रहने का अधिकार दिया जायेगा।

बस ! फिर क्या था? प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए मौत को ललकारते हुए दोनों ही दलों के रण-बांकुरों ने उन्टाला दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। शक्तावत वीर दुर्ग के फाटक के पास पहुँच कर उसे तोड़ने

का प्रयास करने लगे तो चुंडावत वीरों ने समीप ही दुर्ग की दीवार पर कबंध डालकर उस पर चढ़ने का प्रयास शुरू किया।

शक्तावतों का सरदार बल्लू शक्तावत, अद्भुत बलिदान का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए फाटक के शूलों पर सीना अड़ाकर खड़ा हो गया व महावत को हाथी से अपने शरीर पर टक्कर दिलाने को कहा जिससे कि हाथी शूलों के भय से पीछे न हटे। एक बार तो महावत सहम गया, किन्तु फिर ''वीर बल्लू'' के मृत्यु से भी भयानक क्रोधपूर्ण आदेश की पालना करते हुए उसने हाथी से टक्कर मारी जिसके परिणामस्वरूप फाटक में लगे हुए शूल वीर बल्लू शक्तावत के सीने में बिंध गए और वह वीर-गति को प्राप्त हो गया। किन्तु उसके साथ ही दुर्ग का फाटक भी टूट गया। दूसरी और चूंडावतों के सरदार जैत सिंह चुण्डावत ने जब यह देखा कि फाटक टूटने ही वाला है तो उसने पहले दुर्ग में पहुँचने की शर्त जितने के उद्देश्य से अपने साथी को कहा कि ''मेरा सिर काटकर दुर्ग की दीवार के ऊपर से दुर्ग के अन्दर फेक दो।'' साथी जब ऐसा करने में सहम गया तो उसने स्वयं अपना मस्तक काटकर दुर्ग में फेंक दिया। फाटक तोड़कर जैसे ही शक्तावत वीरों के दल ने दुर्ग में प्रवेश किया, उससे पहले ही चुण्डावत सरदार का कटा मस्तक दुर्ग के अन्दर मौजूद था। इस प्रकार चुंडावतों ने अपना हरावल में रहने का अधिकार अद्भुत बलिदान देकर कायम रखा।

3.6 सूर्या और परमाल की वीरता



चित्र सं0-3.5

सिन्धु नरेश दाहिर के दो पुत्र जय सिंह और जयवर्धन ब्राह्मणवाद और आरोर पर शासन करते थे। रावर के युद्ध में महाराज दाहिर की पराजय के बाद मोहम्मद बिन कासिम ब्राह्मणवाद की ओर बढ़ा। ब्राह्मणवाद में जय सिंह की सेना ने पूरी शक्ति के साथ युद्ध किया, किन्तु अल्प सैन्यबल और कासिम की सशक्त अश्व सेना के कारण पराजय मिली। कासिम की सेना ने अपना संस्कार दिखाया और आरोर की हजारों नारियां और बालिकाएं बन्दी बना ली गई। साथ ही बन्दी हुई महाराज दाहिर की छोटी पत्नी महारानी लाड़ी, और उनकी पुत्रियाँ सूर्या देवी और परमाल देवी। अरब के लिए स्त्री सदैव ''सेक्स आब्जेक'' रही है, कासिम की सेना ने सामान्य स्त्रियों को अपनी वासनापूर्ति हेतु बांट लिया और राजपरिवार की स्त्रियों को उपहार के रूप में खलीफा 'सुलेमान-बिन-अब्द-अल-मलिक' की सेवा में प्रस्तुत किया गया। खलीफा ने मुस्कुरा

कर कहा- ''कासिम ने हमें बड़ा ही खूबसूरत तोहफा भेजा है, हम उसके शुक्रगुजार हैं। शहजादियों को हमारे हरम में भेज दिया जाया।'' खलीफा के आदेश का पालन होता, किन्तु तभी राजकुमारी सूर्या देवी ने आगे बढ़ कर कहा-''हम आपको स्वीकार नहीं कर सकते महाराज! कासिम हमें भ्रष्ट कर चुका है।'' खलीफा क्रोध से उबल पड़ा-क्या कह रही हो लड़की? कासिम ऐसा कैसे कर सकता है?

परमाल ने आगे बढ़ कर कहा-''राजकुमारी ठीक कह रही हैं महाराज! आपके पास भेजने के पूर्व कासिम ने हमें अपवित्र किया है, आप चाहें तो हमारे शरीर पा सकते हैं पर हमारी आत्मा मर चुकी है।''

खलीफा ने हाथ पटक कर कहा, कासिम ने हमें अपना ''जूठा'' उपहार भेजा, उसे इसकी सजा भुगतनी ही होगी। उसे हिन्द से वापस बुलाया जाय और उसकी खाल में भूसा भर के दरबार में पेश किया जाय। कासिम जब दमिश्क पहुँचा तो खलीफा से मिलने के पूर्व ही उसे बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या कर दी गयी। उसकी खाली में भूसा भर कर राजदरबार में प्रस्तुत किया गया। खलीफा के सामने जब उसका शव लाया गया तो खलीफा खिलखिला उठा था। उसने आदेश दिया कि सिन्धु राजकुमारियों को दरबार में लाया जाय।

राजकुमारियाँ दरबार में लाई तो पागलों की भाँति हँस रही थीं। आश्चर्यचकित खलीफा ने क्रोध से गरजते हुए पूछा- ''हँस क्यों रही हो?''

दोनों ने एक ही साथ उत्तर दिया- भारत की असंख्य निर्दोष प्रजा के हत्यारे को उसका दण्ड मिल चुका खलीफा, अब हँसे न तो क्या करें? इसने हमें भ्रष्ट नहीं किया था, पर इसे दण्ड देने के लिए हमें झूठ बोलना पड़ा।

खलीफा जैसे तड़प उठा। गरजा-तुम हिन्दू तो झूठ नहीं बोलते, फिर यह क्या था?

सूर्या ने मुस्कुरा कर कहा-कासिम जैसे अधर्मियों को दण्डित करने के लिए बोला गया असत्य भी पवित्र है खलीफा! नैतिकता सज्जनों के समक्ष शोभती है, अधर्मियों के समक्ष नहीं।

खलीफा ने चिढ़ कर आदेश दिया- इन्हें बन्दी बना लिया जाय, इनके अपराध की सजा हम बाद में तय करेंगे।

सैनिक खलीफा के आदेश को पूरा करने के लिए आगे बढ़े, पर राजकुमारियों ने अपने वस्त्रों में छिपाया कटार निकाला और अपने-अपने पेट में भोंक लिया और अपना कत्तव्य पूरा कर दिया।

हजारों वर्ष बीत गए, इतिहास जब भी दाहिर की पुत्रियों का स्मरण करता है तो गर्व से कहता है- ''राजपूती कंगन की सामर्थ्य राजपूती तलवार से तनिक भी कम नहीं।''

3.7 गोरा और बादल का पराक्रम



चित्र सं0-3.6

मेवाड़ की धरती की गौरवगाथा गोरा और बादल जैसे वीरों के नाम के बिना अधूरी है। मुहणोत नैणसी के प्रसिद्ध काव्य 'मारवाड़ रा परगना री विगत' में इन दो वीरों के बारे पुख्ता जानकारी मिलती है। इस काव्य की मानें तो रिश्ते में चाचा और भतीजा लगने वाले ये दो वीर जालौर के चैहान वंश के संबंध रखते थे, जो रानी पद्मिनी की विवाह के बाद चित्तौड़ के राजा रतन सिंह के राज्य का हिस्सा बन गए थे। ये दोनों इतने पराक्रमी थी कि दुश्मन उनके नाम से ही कांपते थे। यही कारण था कि मेवाड़ के राजा रतन सिंह ने उन्हें अपनी सेना की बागडोर दे रखी थी। ये दोनों शूरवीर अपने राज्य की तरफ उठने वाली आँखों को निकाल लेने का माद्दा रखते थे। उन्हें किसी भी कारण वश दुश्मन के सामने झुकना स्वीकार नहीं था।

माना जाता है कि अलाऊद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर हमले से पहले रानी पद्मिनी को शीशे में देखने की बात कही, तो राजा रतन सिंह का खून खौल उठा था, किन्तु उनकी पत्नी रानी पद्मिनी ने ही इस पर उनसे सहमति जताने को कहा था। असल में वह भली-भाँति जानती थी कि अगर खिलजी ने राज्य पर आक्रमण कर दिया तो उसका दुष्परिणाम राज्य की निर्दोष जनता को भुगतना पड़ेगा। यह सोंचते हुये रानी ने राजा को समझाते हुये खिलजी की यह पेशकश मान लेने की सलाह दी। योजना के अनुसार खिलजी को रानी का मुख सामने से ना दिखा कर शीशे में उनका प्रतिबिम्ब दिखाया जाने वाला था। यह बात जब वीर गोरा के संज्ञान में आई तब वह क्रोध से झुलस उठे तथा उन्होंने राजा को ऐसा ना करने का आग्रह किया, किन्तु राजा ने इसे राजनीतिक मजबूरी बता कर उनकी बात मानने से इंकार कर दिया। राजा के इस इंकार से गोरा इतने आहत हुए कि अपने भतीजे बादल के साथ राज्य छोड़ कर चले गए। उनके राज्य छोड़ने का दुष्परिणाम यह हुआ कि उनकी गैरमौजूदगी में खिलजी ने राजा रतन सिंह को छल से अगवा कर लिया।

खिलजी द्वारा राजा रतन सिंह को अगवा किए जाने के बाद खिलजी ने यह सन्देश भिजवाया कि यदि चित्तौड़ की सेना अपने राजा को वापिस चाहती है, तो उन्हें रानी पद्मिनी को उसके हवाले करना

होगा। यदि ऐसा ना हुआ तो वह राजा की मृत्यु के साथ-साथ चित्तौड़ का विनाश भी कर देगा। इस विकट परिस्थिति में रानी पद्मिनी के दिमाग में एक ही नाम गूंजा और वह था सेनापति गोरा का। काफी कोशिशों के बाद रानी को गोरा का पता चला। वह खुद उनके पास गई और उनसे सहायता की गुहार लगाई। शुरुआत में गोरा नहीं माने, किन्तु रानी पद्मिनी ने जब बार-बार द्रवित स्वरों में उनसे आग्रह किया तो गोरा का दिल पिघल गया। उन्होंने रानी को वचन दिया कि भले ही उसे अपने प्राण ही क्यों न गंवाने पड़ें, किन्तु राजा सकुशल चित्तौड़ अवश्य लौटेंगे। किन्तु रानी की दो शर्तें है, पहली यह कि वह अपनी सात सौ दासियों के साथ आएगी, दूसरा यह कि एक बार उन्हें राजा रतन सिंह से मिलने दिया जाएगा। रानी पद्मिनी को पाने की जिद में बैठे खिलजी ने इन शर्तों को मानने में देरी नहीं की। अगले दिन ही योजना के अनुसार सैंकड़ों डोलियाँ तैयार की गयीं, जिनमें दासियों के स्थान पर चित्तौड़ के चुने हुए बहादुर सैनिकों को बिठाया गया, रानी के स्थान पर गोरा स्वयं पालकी में बैठे, सभी पालकियाँ खिलजी के शिविर पर पहुँच गयीं। शर्त के अनुसार रानी को राजा रतन सिंह से मिलने का समय दिया गया।

जैसे ही रतन सिंह पालकी के पास पहुंचे, गोरा ने तेजी से उन्हें पालकी में बैठ जाने को कहा और कुछ साथियों के साथ मेवाड़ की तरफ रवाना कर दिया, यह देख खिलजी का सेनापति भौचक्का रह गया। उसने अपनी सेना को तेजी से हमला करने को कहा। हालांकि, वह गोरा को रोक पाते, उससे पहले ही गोरा खिलजी के कक्ष में जा पहुँचे, जहाँ वह अपनी उपपत्नी के साथ उपस्थित था, कहा जाता है कि गोरा खिलजी को मारने ही वाले थे कि वह जाकर उस महिला के पीछे छिप गया।

खिलजी इस बात को अच्छे से जानता था कि राजपूत वीर किसी महिला अथवा बच्चे पर वार नहीं करते, हुआ भी यही, गोरा की तलवार जहां थी वहीं थम गयी। इस मौके का फायदा उठाते हुए खिलजी के सैनिकों ने गोरा पर पीछे से वार कर के उसका सर धड़ से अलग कर दिया।

गोरा का सिर जमीन पर पड़ा था, बावजूद इसके कहते हैं कि गोरा में इतना बल बचा हुआ था कि उनका धड़ दुश्मन का सामना कर रहा था। अपने पिता से बढ़ कर चाचा की छल पूर्वक हत्या के बाद मानो बादल में स्वयं काल समा गया था।

दुश्मन के भाले द्वारा पेट चीरे जाने के बाद भी बादल अपनी तलवार से युद्ध भूमि को दुश्मनों के लहू से सींचता रहा। उसके साथ चित्तौड़ के अन्य योद्धाओं ने भी महाबली गोरा का बलिदान व्यर्थ नहीं

जाने दिया, उन्होंने एक कदम भी खिलजी की सेना को आगे नहीं बढ़ने दिया। अंततः वह अपने राजा रतन सिंह को मेवाड़ पहुँचाने में सफल रहे। गोरा और बादल जैसे वीरों के कारण ही आज हमारा इतिहास गर्व से अभिभूत है। ऐसे वीर जिनके बलिदान पर हमारे आंसू छलक जाएं, उन्हें कोटि-कोटि नमन।

3.8 पृथ्वीराज चौहान की वीरता



चित्र सं0-3.7

बारहवीं शताब्दी में, अजमेर में एक महान हिन्दू सम्राट हुए, पृथ्वीराज चौहान। वीरता जैसे उनके रक्त में सम्मिलित थी। कहते हैं युवावस्था में ही उन्हें, शब्दभेदी बाण चलने में महारत हासित हो चुका था। 1179 ई0 में अपने पिता की एक संग्राम में मृत्यु के बाद उन्होंने, सिंघासन को संभाला। अपने राज्य विस्तार को लेकर, उन्होंने जो पराक्रम किये उसके चलते, उनकी एक वीर योद्धा एवं शाशक की छवि स्थापित हो चुकी थी। मुहम्मद गोरी, सन् 1191 में पूर्वी पंजाब के भटिंडा में आक्रमण करता है जो कि पृथ्वीराज चौहान के शाशकीय परिक्षेत्र से संलग्न था। पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गोरी की तराइन में मुठभेद होती है। इसी युद्ध को इतिहास तराइन के प्रथम युद्ध के नाम से जानता है। इस युद्ध में पृथ्वीराज विजयी होते हैं और मुहम्मद गोरी को बंधक बना लिया जाता है, किन्तु अपने स्वभाव के अनुरूप दया भाव से, गोरी को रिहा भी कर दिया जाता है, और यही निर्णय बाद में गलत साबित हुआ। पृथ्वीराज को कन्नौज के राजा जयचंद की पुत्री के साथ प्रेम हो जाता है, जयचंद इस रिश्ते को मंजूरी नहीं देता है। जयचंद इस प्रस्ताव से नाखुश होकर, प्रस्ताव के प्रतिरोध में एक स्वयंवर का आयोजन करता है और पृथ्वीराज को आमंत्रित नहीं किया जाता है। लेकिन नियति को कुछ और मंजूर था, स्वयंवर के समय नाटकीय रूप से पृथ्वीराज हाजिर होते हैं और संयुक्ता (जयचंद की पुत्री) को लेकर, तमाम प्रतिरोधों की धता बताते हुए दिल्ली आ पहुँचते हैं।

जयचंद इस अपमान का बदला लेने की फिराक में था, उधर मुहम्मद गोरी भी प्रथम युद्ध का प्रतिशोध लेना चाहता था। अर्थात् पृथ्वीराज के दोनों शत्रु मिल चुके थे। मुहम्मद गोरी, राजपूतों की युद्ध परम्परा के प्रतिकूल समय पर आक्रमण करता है और इस तरह तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज की पराजय होती है और उसे बंधक बना लिया जाता है। इस पूरे घटनाक्रम में पृथ्वीराज के एक मित्र सदैव उनके साथ रहे। इस मित्र का नाम था-चंदबरदाई। चंदबरदाई को उनके राज्य में राजकवि का दर्जा प्राप्त था।

चंदबरदाई का पृथ्वीराज के साथ अनुराग कुछ ऐसा था कि जब तराइन के द्वितीय युद्ध में पराजय के बाद इन्हें गजनी भेजा गया तो चंदबरदाई भी इनके साथ गए। वहां पृथ्वीराज चौहान को कई यातनाएं सहनी पड़ी। धातु की गर्म छड़ों से इन्हें नेत्र विहीन कर दिया गया। चंदबरदाई को अपने परम मित्र के साथ ये दुर्भाव तनिक भी नहीं भाया। तभी चंदबरदाई ने अपनी युक्ति से मुहम्मद गोरी का विश्वास जीता और उसका प्रिय भी बन गया। एक दिन, चंदबरदाई ने पृथ्वीराज की 'शब्दभेदी बाण' चलने की क्षमता को मुहम्मद गोरी के सामने बहुत आकर्षक ढंग से बताया। गोरी की जिज्ञासा हुई इस कला को देखने की सो पृथ्वीराज को दरबार में बुलाया गया और कला प्रदर्शन का आदेश दिया गया। पृथ्वीराज अपनी कला का प्रदर्शन करते रहे और सही मौका देखकर, चंदबरदाई ने एक दोहा पढ़ दिया और वो दोहा था ये-

चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण

ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान।

फिर क्या? पृथ्वीराज ने इस मौके को चूके बिना भुना लिया। चौबीस गज और आठ अंगुल पे बैठे मुहम्मद गोरी अगले बाण का शिकार हुए। इस तरह चंदबरदाई ने श्रेष्ठ मैत्री का परिचय देते हुए, गोरी का वध करने में पृथ्वीराज की मदद की। इससे पहले की शत्रु की तरफ से कोई और प्रतिघात होता इन मित्रों पर, दोनों ने स्वयं एक दूसरे को मारकर, मित्रता अमर कर दी।

3.9 झलकारी बाई का बलिदान



चित्र सं0-3.8

झलकारी झाँसी राज्य के एक बहादुर कृषक सदोवा सिंह की पुत्री थी। उसका जन्म **22 नवम्बर, 1830 ई0** को झाँसी के समीप भोजला नामक गाँव में हुआ था। झलकारी बचपन से ही बहुत साहसी और दृढ़ प्रतिज्ञ बालिका थी। एक अन्य अवसर पर जब डकैतों के एक गिरोह ने गाँव के एक व्यवसायी पर हमला किया तब झलकारी ने अपनी बहादुरी से उन्हें पीछे हटने को मजबूर कर दिया था। इस घटना ने झलकारी को बहुत लोकप्रिय बना दिया। उसकी इस बहादुरी से खुश होकर गाँव वालों ने उसका विवाह रानी लक्ष्मीबाई की सेना के एक तोपची पूरन सिंह से करवा दिया।

एक बार गौरी पूजा के अवसर पर झलकारी गाँव की अन्य महिलाओं के साथ महारानी को सम्मान देने झाँसी के किले में गयीं, वहाँ रानी लक्ष्मीबाई उन्हें देखकर अवाक रह गयी क्योंकि झलकारी

बिल्कुल रानी लक्ष्मीबाई की तरह दिखतीं थी (दोनों के रूप में अलौकिक समानता थी)। अन्य औरतों से झलकारी की बहादुरी के किस्से सुनकर रानी लक्ष्मीबाई बहुत प्रभावित हुई। महारानी लक्ष्मीबाई ने उनकी योग्यता, साहस एवं बुद्धिमत्ता परख कर झलकारी को महिला फौज यानि दुर्गा सेना में शामिल करने का आदेश दिया। झलकारी ने यहाँ अन्य महिलाओं के साथ बंदूक लाना, तोप चलाना और तलवारबाजी की प्रशिक्षण लिया और थोड़े ही समय में फौज के सभी कार्यों में विशेष दक्षता प्राप्त कर ली।

लार्ड डलहौजी की राज्य हड़पने की नीति के चलते, ब्रिटिशों ने निःसंतान लक्ष्मीबाई को उनका उत्तराधिकारी गोद लेने की अनुमति नहीं दी, हालांकि, ब्रिटिश की इस कार्रवाई के विरोध में रानी के सारी सेना, उसके सेनानायक और झांसी के लोग रानी के साथ लामबंद हो गये और उन्होंने आत्मसमर्पण करने के बजाय ब्रिटिशों के खिलाफ हथियार उठाने का संकल्प लिया। **अप्रैल 1858** के दौरान, लक्ष्मीबाई ने झांसी के किले के भीतर से, अपनी सेना का नेतृत्व किया। ब्रिटिश सेना ने झाँसी के किले को घेर रखा था। दोनों ओर से भयंकर युद्ध चल रहा था। अँग्रेजी सेना के तोपची किले की दीवारों को तोड़ने के लिए उन्हें अपनी तोपों का निशाना बना रहे थे। अँग्रेजी सेना की बंदूकें भी किले के रक्षकों पर भयंकर गोलीवर्षा कर रही थी। किले के रक्षकों की संख्या निरंतर कम होती जा रही थी।

ऐसे समय में लक्ष्मीबाई ने युद्ध परिषद की एक आपातकालीन बैठक बुलवाई। इसमें आगामी युद्ध के विषय में चर्चा की जा रही थी। इसी समय एक प्रहरी ने महारानी लक्ष्मीबाई को बताया कि महिला फौज की एक सैनिक झलकारी उनसे मिलना चाहती है।

''आज्ञा है।'' महारानी लक्ष्मीबाई ने कहा।

झलकारी ने निवेदन करते हुए कहा-

''बात यह है, बाईसाहब, कि हमारे सैनिकों की संख्या में निरन्तर कमी होती जा रही है। निरन्तर घिरे रहने के कारण खाद्य सामग्री भी तो समिति ही रह गई है। मेरे पति ने मुझे यह भी बताया कि हमारे तोपचियों में कुछ के गद्दार होने की आशंका भी है। स्थिति का लाभ उठाकर और किसी स्थान पर किले की दीवार तोड़कर यदि शत्रु सेना अन्दर आ गई तो हमें किले के अन्दर ही आमने-सामने युद्ध करना पड़ेगा। हम नहीं चाहते कि उस स्थिति में आप किसी संकट में पड़े।''

झलकारी की बात सुनने के बाद महारानी लक्ष्मीबाई ने उसे कहा-

"इस संकट से निकटने के लिए तुम्हारे पास क्या योजना है?"

झलकारी ने इसका उत्तर देते हुए कहा-

"बाईसाहब! अब आपको इस किले से किसी भी प्रकार बाहर हो जाना चाहिए। दुश्मन को धोखे में डालने के लिए यह उचित होगा कि आपका वेश धारण करके पहले मैं छोटी-सी टुकड़ी लेकर किसी मोरचे से भागने का प्रयत्न करूँ। मुझको रानी समझकर दुश्मन अपनी पूरी शक्ति से मुझे पकड़ने या मारने का प्रयत्न करेगा। इसी बीच दूसरी तरफ से आप किले से बाहर हो जाइए। स्थिति का लाभ उठाकर आप सुरक्षित स्थान पर पहुँच सकती हैं और फिर सैन्य संगठन करके अंग्रेजी सेना पर आक्रमण कर सकती हैं।" महारानी लक्ष्मीबाई को झलकारी की योजना पसन्द आ गई। रानी के सेनानायकों में से एक दूल्होव ने उसे धोखा दिया और किले का एक संरक्षित द्वार ब्रिटिश सेना के लिए खोल दिया। जब किले का पतन निश्चित हो गया तो रानी के सेनापतियों और झलकारी बाई ने उन्हें कुछ सैनिकों के साथ किला छोड़कर भागने की सलाह दी। योजनानुसार महारानी लक्ष्मीबाई एवं झलकारी दोनों पृथक-पृथक से किले बाहर निकलीं। झलकारी ने तामझाम अअिधक पहन रखा था। शत्रु ने उन्हें ही रानी समझा और उन्हें ही घेरने का प्रयत्न किया। रानी अपने घोड़े पर बैठ अपने कुछ विश्वस्त सैनिकों के साथ झांसी से दूर निकल गई। शत्रु सेना से घिरी झलकारी भयंकर युद्ध करने लगी। एक भेदिए ने पहचान लिया और झलकारी घेर ली गई। ह्यूरोज बोला बहादुर औरत शाबास। जिस रानी की नौकरानी इतनी बहादुर है वह रानी कैसी होगी।

जनरल रोज ने झलकारी को एक तम्बु में कैद कर लिया और उनके बाहर से पहरा बिठा दिया। अवसर पाकर झलकारी रात में चुपके से भाग निकली। जनरल रोज ने प्रातः होते ही किले पर भयंकर आक्रमण कर दिया। उसने देखा कि झलकारी एक तोपची के पास खड़ी होकर अपनी बन्दूक से गोलियाँ कि वर्षा कर रही है। अंग्रेजी तोपची का गोला झलकारी के पास वाले तोपती को लगा। वह तोपची झलकारी का पति पूरन सिंह था। इस समय एक गोला झलकारी को भी लगा और जय भवानी कहती हुई वह भूमि पर अपने पति के शव के समीप ही गिर पड़ी। वह अपना काम कर चुकी थी और अंत में लड़ती हुई वीरगति को प्राप्त हुई। उनके शौर्य और झाँसी की रानी को बचाने के लिए उनके द्वारा दिए गए आत्म बलिदान और राष्ट्र हित भाव को सबने नमन किया है।

3.10 शुभ्रक (घोड़ा) की स्वामिभक्ति



चित्र सं0-3.9

कुतुबुद्दीन ऐबक मोहम्मद गोरी का खरीदा हुआ एक गुलाम था। कुतुबुद्दीन कुल चार साल (1206 से 1210 तक) दिल्ली का शासक रहा। इन चार साल में वो अपने राज्य का विस्तार, इस्लाम के प्रचार और बुतपरस्ती का खात्मा करने में लगा रहा। जिसे कुतुबमीनार कहते हैं वो महाराजा वीर विक्रमादित्य की बेधशाला थी। जहाँ बैठकर खगोलशास्त्री वराहमिहर ने ग्रहों, नक्षत्रों, तारों का अध्ययन कर, भारतीय कैलेण्डर ''विक्रम संवत'' का आविष्कार किया था। यहाँ पर 27 छोटे छोटे भवन (मंदिर) थे जो 27 नक्षत्रों के प्रतीक थे और मध्य में विष्णु स्तम्भ था, जिसको ध्रुव स्तम्भ भी कहा जाता था। दिल्ली पर कब्जा करने के बाद उसने उन 27 मंदिरों को तोड़ दिया। विशाल विष्णु स्तम्भ को तोड़ने का तरीका समझ न आने पर उसने उसको तोड़ने के बजाय अपना नाम दे दिया, तब से उसे कुतुबमीनार कहा जाने लगा, कालान्तर में यह झूठ प्रचारित किया गया कि कुतुबमीनार को कुतुबुद्दीन ने बनवाया था, जबकि वो एक विध्वंशक था न कि कोई निर्माता।

अब बात कहते हैं कुतुबुद्दीन की मौत की, इतिहास की किताबों में लिखा है कि उसकी मौत पोलो खेलते समय घोड़े से गिरने पर से हुई, ये अफगान/तुर्क लोग ''पोलो'' नहीं खेलते थे, पोलो खेल अंग्रेजों ने शुरू किया। अफगान/तुर्क लोग बुजकशी खेलते हैं जिसमें एक बकरे को मारकर उसे लेकर घोड़े पर भागते है, जो उसे लेकर मंजिल तक पहुंचता है, वो जीतता है।

कुतुबुद्दीन ने अजमेर के विद्रोह को कुचलने के बाद राजस्थान के अनेकों इलाकों में कहर बरपाया था। उसका सबसे बड़ा विरोध उदयपुर के राजा ने किया, परन्तु कुतुबद्दीन उसको हराने में कामयाब रहा। उसने धोखे से राजकुंवर को बंदी बना लिया और उसको जान से मारने की धमकी देकर, राजकुंवर और उनके घोड़े शुभ्रक को पकड़ कर लाहौर ले आया। एक दिन राजकुंवर ने कैद से भागने की कोशिष की, लेकिन पकड़ा गया। इस पर क्रोधित होकर कुतुबुद्दीन ने उसका सर काटने का हुकुम दिया। दरिंदगी दिखाने के लिए उसने कहा कि- बुजकशी खेला जाएगा लेकिन इसमें बकरे की जगह राजकुंवर का कटा हुआ सर इस्तेमाल होगा। कुतुबुद्दीन ने इस काम के लिए, अपने लिए घोड़ा भी राजकुंवर का ''शुभ्रक'' चुना।

कुतुबुद्दीन ''शुभ्रक'' पर सवार होकर अपनी टोली के साथ जन्नत बाग में पहुँचा। राजकुंवर को भी जंजीरों में बांधकर वहाँ लाया गया। राजकुंवर का सर काटने के लिए जैसे ही उनकी जंजीरों को खोला गया, शुभ्रक ने उछलकर कुतुबुद्दीन को अपनी पीठ से नीचे गिरा दिया और अपने पैरों से उसकी छाती पर कई वार किये, जिससे कुतुबुद्दीन वहीं पर मर गया। इससे पहले कि सिपाही कुछ समझ पाते राजकुंवर शुभ्रक पर सवार होकर वहाँ से निकल गए। कुतुबुद्दीन के सैनिकों ने उनका पीछा किया मगर वो उनको पकड़ न सके। शुभ्रक कई दिन और कई रात दौड़ता रहा और अपने स्वामी को लेकर उदयपुर के महल के सामने आ कर रुका। वहाँ पहुँचकर जब राजकुंवर ने उतर कर पुचकारा तो वो मूर्ति की तरह शांत खड़ा रहा।

वो मर चुका था, सर पर हाथ फेरते ही उसका निष्प्राण शरीर लुढ़क गया। कुतुबुद्दीन की मौत और शुभ्रक की स्वामिभक्ति की इस घटना के बारे में हमारे स्कूलों में नहीं पढ़ाया जाता है धन्य है भारत की भूमि जहाँ इंसान तो क्या जानवर भी अपनी स्वामी भक्ति के लिए प्राण दांव पर लगा देते हैं।

चतुर्थ अध्याय : शोध अध्ययन की प्रक्रिया

4.1 शोध अध्ययन विधि

4.2 अध्ययन समष्टि

4.3 निर्धारित लक्षित प्रतिदर्श का चयन

4.4 न्यादर्श चयन विधि

4.5 लक्षित न्यादर्श का चयन

4.6 शोध उपकरण

4.7 परीक्षण का प्रशासन

4.8 परीक्षण का फलांकन

4.9 संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय प्रविधि

4.1 शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री ने अध्ययन के उद्देश्य और साधनों की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए अनुसंधान के सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

सर्वेक्षण से तात्पर्य ऐसे अध्ययनों से है जिसमें कि शोधकर्त्री किसी विशेष स्थान पर जाकर कुछ अवस्थाओं या परिस्थितियों से सम्बन्धित सही सूचनाओं का संकलन करता है।

"सर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक, वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत व्यापक तथा कम आकर वाली जनसंख्याओं का अध्ययन उनमें से चयन किये गये प्रतिदर्श के आधार पर इस आशय से किया जाता है ताकि उनमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के घटनाक्रमों, वितरणों तथा पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों का ज्ञान उपलब्ध हो सके।"

-एफ0एन0 करलिंगर

4.2 अध्ययन समष्टि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एक प्रकार की समष्टि (विद्यार्थी समष्टि) को समाहित किया गया है। वर्तमान शोध समष्टि के अन्तर्गत 15-18 वर्ष की आयु समूह के छात्र-छात्राएँ समाविष्ट है, जो कक्षा 10वीं और 11वीं में अध्ययनरत् हैं। समष्टि के अन्तर्गत समस्त जातियों, धर्मों, पारिवारिक व्यवसायों में रत व्यक्तियों को समाहित किया गया है।

4.3 निर्धारित लक्षित प्रतिदर्श का चयन

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श चयन में पर्याप्ता तथा प्रतिनिधित्वता का विशिष्ट ध्यान रखा गया है। वर्तमान अध्ययन में शोधकर्त्री ने प्रतिनिधित्वता हेतु **प्रासंगिक न्यादर्श** तकनीकी का तथा पर्याप्तता हेतु उचित न्यादर्श आकार का प्रयोग किया। शोध योजना के समय लक्षित न्यादर्श का आकार तथा उसका विभाजन निश्चित किया गया था।

4.4 न्यादर्श चयन विधि

अनुसंधान कार्य को सम्पन्न करने एवं तथ्यों को एकत्र करने हेतु आदर्श न्यादर्श का चयन किया जाना आवश्यक है। न्यादर्श समष्टि का वह अंश होता है, जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का

स्पष्ट गुण विद्यमान रहता है। एक न्यादर्श तभी उपयुक्त होगा जब वह समष्टि का प्रतिनिधित्व सही ढंग से करेगा।

बोगार्डस के अनुसार-

''न्यादर्श एक पूर्व नियोजित योजना के अनुसार इकाइयों के एक समूह में से निश्चित प्रतिशत का चुनाव है।''

प्रस्तुत अनुसंधान में **''प्रासंगिक न्यादर्श विधि''** का चयन किया गया है। इस विधि में शोधकर्त्री उन सभी व्यक्तियों को अपने न्यादर्श में सम्मिलित करने के लिये चुन लेती है, जो उसे सरलता एवं सुविधापूर्वक उपलब्ध हो जाते है। यह विधि काफी हद तक कोटा न्यादर्श के समान है। ऐसे प्रतिदर्श में मूलतः निम्न कसौटियों पर व्यक्तियों का चयन किया जाता है-

(1) जो इच्छुक होते है।

(2) जो आसानी से उपलब्ध होते है।

4.5 लक्षित न्यादर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श के चयन हेतु निम्नांकित का अनुकरण किया गया-

4.5.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचित्य

जैसे कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है वर्तमान शोध अध्ययन हेतु, शोधकर्त्री द्वारा **उत्तर-प्रदेश के बाँदा जनपद** का चयन किया गया है। बाँदा जनपद के अन्तर्गत कई क्षेत्र आते है, जिसमें से शोधकर्त्री ने अतर्रा क्षेत्र का चयन न्यायोचित्य समझा है।

4.5.2 विद्यालयों का चयन

बाँदा जनपद के अन्तर्गत शोधकर्त्री ने **प्रासंगिक न्यादर्श** विधि द्वारा **अतर्रा क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है**। माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है। माध्यमिक विद्यालयों में **4 यू0पी0 बोर्ड के विद्यालय** और **1 सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यालय** का चयन किया गया है।

तालिका 4.5.2.1 अतर्रा क्षेत्र में अवस्थित चयनित मा0वि0 का विवरण

क्र0सं0	यू0पी0 बोर्ड के चयनित माध्यमिक विद्यालय	सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के चयनित माध्यमिक विद्यालय
1.	ब्रह्म विज्ञान इण्टर कॉलेज, अतर्रा	शान्ति धाम स्कूल, अतर्रा
2.	श्रीमती बूटूबाई इण्टर कॉलेज, अतर्रा	
3.	राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा	
4.	तथागत ज्ञानस्थली इण्टर कॉलेज, अतर्रा	

4.5.3 प्रतिदर्श चयन

चयनित माध्यमिक विद्यालयों में से लक्षित प्रतिदर्श चयन, **प्रासंगिक न्यादर्श विधि** द्वारा किया गया है। अर्थात् समस्त विद्यार्थियों में से चयनित **100 विद्यार्थियों** को सम्मिलित किया गया है। चयनित प्रतिदर्श का विद्यालय के अनुसार वितरण निम्न तालिका में प्रस्तुत है-

तालिका 4.6.3.1 विद्यालयवार चयनित प्रतिदर्श का लिंग अनुसार वितरण

क्र0सं0	चयनित माध्यमिक विद्यालय	चयनित विद्यार्थी		योग
		छात्र सं0	छात्रा सं0	
1.	ब्रह्म विज्ञान इण्टर कॉलेज, अतर्रा	13	13	26
2.	श्रीमती बूटूबाई इण्टर कॉलेज, अतर्रा	6	4	10
3.	राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा	NA	4	4
4.	तथागत ज्ञानस्थली इण्टर कॉलेज, अतर्रा	24	NA	24
5.	शान्ति धाम स्कूल, अतर्रा	20	16	36
	योग	**63**	**37**	**100**

4.6 शोध उपकरण

शोध उपकरण के रूप में शोधकर्त्री द्वारा **स्वनिर्मित गौरवशाली इतिहास जागरूकता प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया है। जागरूकता प्रश्नावली के निर्माण हेतु विभिन्न आयामों का चयन किया और तत्पश्चात् निर्देशक की स्वीकृति के पश्चात् ही अंतिम रूप से उनका चयन किया गया।

4.6.1 गौरवशाली इतिहास जागरूकता प्रश्नावली निर्माण की प्रक्रिया

गौरवशाली इतिहास जागरूकता प्रश्नावली निर्माण हेतु शोधकर्त्री ने निम्न स्रोतों की सहायता ली-

1. गौरवशाली इतिहास से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन।
2. शोध शीर्षक को ध्यान में रखते हुये शोध अध्ययन तथा समाचार लेखों का सर्वेक्षण जो प्रश्नावली का आधार स्तम्भ हो सकते है।
3. प्रमुख शिक्षाविद् एवं शोध विशेषज्ञों की राय।
4. स्वः अनुभव।

4.6.2 गौरवशाली इतिहास जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण

वर्तमान शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर में गौरवशाली इतिहास का अध्ययन करना था। इस हेतु शोधार्थिनी ने जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया।

गौरवशाली इतिहास के अन्तर्गत शोधार्थिनी ने चयनित **9** गौरवशाली गाथाओं को शोध अध्ययन में समाहित किया है। चयनित गाथाओं का विस्तृत अध्ययन करने के बाद प्रश्नावली में समस्या के विभिन्न आयामों से सम्बन्धित (अति लघु उत्तरीय) प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली में कुल **56** प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है, प्रश्नावली की **100** प्रतियाँ करायी गयी। एक प्रश्नावली में कुल **4** पेज है जिसके प्रथम पेज में प्रश्नावली से सम्बन्धित निर्देश दिये गये है। प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक लाइन में देने हैं जिसके लिये प्रश्नों के सामने रिक्त स्थान रखा गया है। दिये गये प्रश्न/कथन के सामने सही उत्तर विद्यार्थी द्वारा स्वयं लिखा जायेगा। प्रश्नावली के द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में गौरवशाली इतिहास जागरूकता के स्तर को मापा जा सकेगा।

4.7 परीक्षण का प्रशासन

परीक्षण का प्रशासन शोधकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किया गया। सर्वप्रथम चयनित माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं अध्यापकों से आज्ञा प्राप्त की गयी। तत्पश्चात् परीक्षण प्रशासित करने से पूर्व चयनित कक्षाओं के विद्यार्थियों से शोधकर्त्री द्वारा सौहार्द्ध सम्बन्ध स्थापित किए गये एवं उनको शोध उद्देश्यों से परिचित कराया गया।

सम्बन्ध-स्थापन के पश्चात् विद्यार्थियों को सभी प्रश्न-पुस्तिकाओं को क्रमशः एक-एक करके शोधकर्त्री द्वारा वितरित किया गया। प्रश्नावली से सम्बन्धित सभी निर्देशों को स्पष्ट किया गया तथा प्रश्नों के उत्तर सही रूप से भरने के लिये अनुरोध किया गया। सभी परीक्षणों का प्रशासन 2 दिन की समयावधि में किया गया। प्रश्नावली भरते समय विद्यार्थियों में उत्सुकता देखी गयी तथा विद्यार्थियों द्वारा उत्तर पुस्तिकाएँ पूर्ण करने के पश्चात् उन्हें एकल कर लिया गया तथा उनके सहयोग के लिये धन्यवाद प्रेषित किया गया।

4.8 परीक्षण का फलांकन

किसी भी शोध कार्य से सम्बन्धित सूचनाएँ तभी सार्थक होती है जब ये परिमाणात्मक रूप से प्रस्तुत की जायें। क्योंकि किसी भी तथ्य को गुणात्मक रूप से समझने की अपेक्षा परिमाणात्मक रूप से समझना आसान होता है। शोधकर्त्री ने प्रश्नावली परीक्षण के फलांकन हेतु गौरवशाली गाथाओं से सम्बन्धित एक आदर्श उत्तर पुस्तिका का निर्माण किया है। आदर्श उत्तर पुस्तिका के अनुसार सही उत्तर का फलांकन करते समय 1 अंक दिया गया तथा गलत उत्तर देने व उत्तर न देने पर 0 अंक प्रदान किया गया।

तालिका 4.9.1 गौरवशाली इतिहास जागरूकता प्रश्नावली से सम्बन्धित आदर्श उत्तर पुस्तिका

आदर्श उत्तर पुस्तिका	
क्र0सं0	उत्तर
1	हाडा रानी
2	रावत चुण्डावत
3	7 दिन
4	राणा राज सिंह
5	वीरवर/अविलम्ब अपनी सैन्य टुकड़ी को लेकर औरंगजेब की सेना को रोंको
6	मुझे भूलना मत। मैं जरूर लौटूंगा
7	अपना सिर काटकर अंतिम निशानी भेजी
8	जूनागढ़
9	पाटन के राजा ने
10	शत्रुसेना को विजय प्राप्त हुयी
11	मंत्री धर्मदेव
12	रामनाथ अहीर के यहाँ
13	तलवार से मौत के घाट उतार दिया
14	अपने पुत्र को राजकुमार के वस्त्र पहनाकर सेनापति के समक्ष उपस्थित किया
15	नौरोज मेला
16	9 दिन
17	सुन्दर युवतियों को खोजना
18	किरण देवी पर
19	पुत्री-शक्ति सिंह/पत्नी-पृथ्वीराज राठौर
20	नौरोज मेले में
21	अपनी कटार निकालकर अकबर के गर्दन में रख दी

22	चुण्डावत और शक्तावत
23	हरावल
24	उन्टाला दुर्ग
25	शक्तावत दल ने
26	स्वयं अपना मस्तक काटकर दुर्ग में फेंक दिया।
27	सूर्या देवी और परमाल देवी
28	मुहम्मद बिन कासिम की सेना ने
29	बन्दी बना लिया
30	खलीफा सुलेमान-बिन-अब्द-मलिक
31	खलीफा से असत्य बोलकर कासिम की खाल में भूसा भरवाया और मृत्युदण्ड दिलाया
32	मेवाड
33	गोरा और बादल को
34	चाचा और भतीजा
35	अलाउद्दीन खिलजी
36	राजा को बन्दी बना लिया
37	पद्मावती ने
38	गोरा और बादल ने
39	अजमेर
40	मुहम्मद गोरी ने
41	जयचन्द्र ने
42	बन्दी बना लिया/धातु की गर्म छड़ों से नेत्र विहीन कर दिया।
43	शब्दभेदी बाण चलाकर
44	चन्दबरदायी ने
45	झलकारी बाई

46	दुर्गा सेना में
47	दूल्हेराव ने
48	झलकारी बाई ने
49	अंग्रेजों का मुकाबला करते हुये वीरगति को प्राप्त हुयी।
50	कुतुबुद्दीन ऐबक
51	विष्णु स्तम्भ
52	उदयपुर के
53	शुभ्रक
54	लाहौर
55	बुजकशी खेल
56	कुतुबुद्दीन को पैरों से रौंद डाला

4.9 संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय प्रविधि

अनुसंधान का आधार सम्बन्धित तथ्यों का संकलन, विश्लेषण व निर्वचन होता है। अनुसंधान कार्य को सुचारू रूप से करने के लिए सांख्यिकी ज्ञान आवश्यक है। प्रत्येक शोध कार्य में सांख्यिकी विधियों द्वारा एकत्रित सूचनाओं व संकलित तथ्यों का विश्लेषण तथा व्याख्या की जाती है।

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिये जागरूकता प्रश्नावली के समंकों के विश्लेषण हेतु **प्रतिशत, मध्यमान, मानक-विचलन, टी-परीक्षण** सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया।

1. प्रतिशत

अतर्रा क्षेत्र में मा0 स्तर के विद्यार्थियों का भारत के गौरवशाली इतिहास जागरूकता की विभिन्न श्रेणियों में विद्यार्थियों की संख्या का प्रतिशत ज्ञात करने हेतु प्रतिशत सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा।

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{प्राप्तांक}}{\text{पूर्णांक}} \times 100$$

2. मध्यमान

गणितीय मध्यमान या अधिक सरलता से कहे जाने पर मध्यमान विभिन्न प्राप्तांकों या मापनों का वह कुल योग है जो उनकी संख्या से भाग देने पर आता है। जब केन्द्रीय प्रवृत्तियों के माप में अधिक स्थिरता की आवश्यकता होती है तथा जब अन्य सांख्यिकी जैसे-प्रमाप विचलन, सह-संबंध की गणना बाद में की जाती है, तब बहुत सी सांख्यिकी मध्यमान पर आश्रित होती है।

यह समान्तर मध्यमान या औसत होता है। औसत के माप में मध्यमान सबसे सर्वश्रेष्ठ माप है। इसका प्रयोग तब किया जाता है जबकि वितरण सामान्य हो। इसका उपयोग शैक्षिक अनुसंधान कार्यों में अधिक किया जाता है। इसका साधारण तरीका यह है कि उपलब्ध संख्याओं को जोड़कर संख्याओं का कुल योग का भाग कर दिया जाता है। चूंकि प्रस्तुत शोध में इकाइयाँ 30 से अधिक है। अतः वर्गीकृत विधि से मध्यमान की गणना की गई है। इसके लिए संकेत का प्रयोग किया जाता है। मध्यमान ज्ञात करने के लिए सूत्र इस प्रकार से है-

$$\mathbf{M} = \frac{\sum \mathbf{fx}}{\mathbf{N}}$$

जहाँ-

M = मध्यमान

f = आवृत्तियाँ

x = वर्गान्तर के मध्य बिन्दु

N = न्यादर्श की संख्या

3. मानक विचलन

विचलन के मापों में सबसे सर्वश्रेष्ठ मानक विचलन है क्योंकि विचलन के माप ज्ञात करते समय इसमें सभी अंक प्रभावित होते हैं और सभी अंकों से मध्यमान की दूरी ज्ञात की जाती है। अनुसंधान कार्यों में विचलन का माप ज्ञात करने के लिए मानक विचलन का ही प्रयोग किया जाता है।

मानक विचलन की गणना तब की जाती है जबकि केन्द्रीय प्रवृत्ति का मान मध्यमान के द्वारा ज्ञात किया गया हो। मानक विचलन के लिए संकेत का प्रयोग किया जाता है। मानक विचलन ज्ञात करने के लिए सूत्र इस प्रकार से है-

$$\sigma = \sqrt{\frac{\sum fd^2}{N}}$$

जहाँ-

σ	=	मानक विचलन
Σ	=	कुल योग
√	=	वर्गमूल
f	=	आवृत्ति
d^2	=	विचलनों का वर्ग
N	=	न्यादर्श की कुल संख्या

4. टी-परीक्षण

दो समूहों से प्राप्त मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता की जाँच टी-परीक्षण से की जाती है। टी-परीक्षण से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि प्राप्त अन्तर न्यादर्श की त्रुटि के कारण है अथवा उनमें सार्थक अन्तर है। जब दो समूहों के मध्यमान में अन्तर प्राप्त हो जाता है तब टी-परीक्षण के द्वारा शून्य परिकल्पना की पुष्टि की जाती है। पुष्टि हो जाने पर निष्कर्ष निकाला जाता है।

जब अलग-अलग समूह पर परीक्षण प्रशासित करके उन समूहों के मध्यमान के अन्तरों के ''अन्तर की सार्थकता'' की जाँच करनी होती है तब इसका प्रयोग किया जाता है। इसे क्रांतिक अनुपात भी कहा जाता है। इसकी गणना तब की जाती है जब न्यादर्श 30 या 30 से बड़ा हो। इसका सूत्र निम्न है-

$$\mathbf{t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{SD_1^2}{N_1} + \frac{SD_2^2}{N_2}}}}$$

जहाँ-

M_1	=	प्रथम समूह का मध्यमान
M_2	=	द्वितीय समूह का मध्यमान
SD^1	=	प्रथम समूह का मानक विचलन का वर्ग
SD^2	=	द्वितीय समूह का मानक विचलन का वर्ग
N_1	=	प्रथम समूह की संख्या
N_2	=	द्वितीय समूह की संख्या

पंचम अध्याय : प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

5.1 प्रश्नवार गौरवशाली इतिहास जागरूकता विश्लेषण

5.2 समग्र गौरवशाली इतिहास जागरूकता विश्लेषण

5.1 प्रश्नवार गौरवशाली इतिहास जागरूकता विश्लेषण

इसके अन्तर्गत चयनित गौरवशाली गाथाओं का प्रश्नवार विश्लेषण एवं विवेचन किया जायेगा। गौरवशाली इतिहास जागरूकता का स्तर छात्र-छात्राओं एवं कुल विद्यार्थियों के अनुसार प्रतिशत मान के द्वारा मापा जायेगा।

5.1.1 हाडा रानी के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

तालिका संख्या-5.1

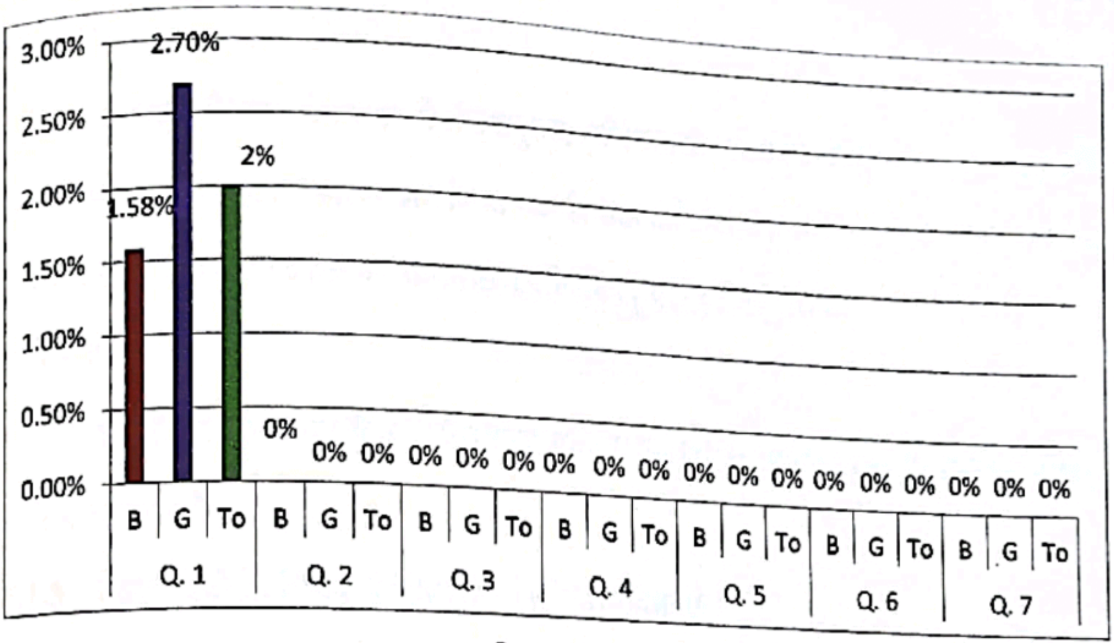
लिंग के आधार पर गोरा और बादल के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

प्रश्न सं0	1		2		3		4		5		6		7	
प्रश्न	किस पत्नी ने अपने पति को उसका कर्त्तव्य याद दिलाने के लिये सबसे बड़ा बलिदान दिया?		यह किसकी पत्नी थी?		विवाह के कितने दिन बाद उन्होंने अपना बलिदान दिया?		उस सरदार को किसका पत्र आया?		पत्र में क्या संदेश था?		युद्ध मार्ग से उस सरदार ने रानी को क्या संदेश भेजा?		रानी ने पत्र के प्रतिउत्तर में क्या किया?	
विकल्प	✓उ0 (हाड़ा रानी)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (रावत चुण्डावत)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (7 दिन)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (राणा राज सिंह)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (अपनी सैन्य टुकड़ी को लेकर सेना को रोको)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (मुझे भूलना मत मैं जरूर लौटूंगा)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (अपना सिर काटकर अंतिम निशानी भेजी)	✗उ0 कोई नहीं
छात्र आवृत्ति	1		0		0		0		0		0		0	
छात्र प्रतिशत	1.58		0		0		0		0		0		0	
छात्रा आवृत्ति	1		0		0		0		0		0		0	
छात्रा प्रतिशत	2.70		0		0		0		0		0		0	
कुल विद्यार्थी आवृत्ति	2		0		0		0		0		0		0	
कुल विद्यार्थी प्रतिशत	2		0		0		0		0		0		0	

छात्र (N) = 63, छात्रा (N) = 37, कुल विद्यार्थी (N) = 100

विश्लेषण

उपरोक्त गौरवशाली गाथा में लिंगानुसार, गौरवशाली इतिहास जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों का जागरूकता प्रतिशत ज्ञात किया गया। तालिका सं0-5.1 के अनुसार प्राप्त परिणामों के आधार पर प्रश्न सं0 1 से लेकर प्रश्न सं0 7 तक का जागरूकता प्रतिशत अत्यधिक न्यून प्राप्त हुआ है। प्रश्न सं0 1 के प्रति 1.58 प्रतिशत छात्र, 2.70 प्रतिशत छात्राएँ एवं 2 प्रतिशत कुल विद्यार्थी जागरूक पाये गये। प्रश्न सं0 2, 3, 4, 5, 6, 7 का प्रतिशत 0 प्राप्त हुआ।



चित्र सं0-5.1

विवेचना

उपरोक्त विश्लेषण में उक्त तालिका एवं चित्र के अनुसार जागरूकता प्रतिशत ''श्रीमती बूटूबाई इण्टर कॉलेज, अतर्रा'' से प्राप्त हुआ है। शेष विद्यालयों का प्रतिशत शून्य प्राप्त हुआ। इस गौरवशाली गाथा के प्रति विद्यालय परिवार एवं सोशल मीडिया विद्यार्थियों को जागरूक करने में असफल है।

5.1.2 जूनागढ़ के रामनाथ अहीर के विषय में जागरूकता

तालिका संख्या-5.2

लिंग के आधार पर जूनागढ़ के रामनाथ अहीर के विषय में जागरूकता

प्रश्न सं0	8		9		10		11		12		13		14
प्रश्न	राव महिपाल कहाँ के राजा थे?		उनके राज्य पर किसने आक्रमण किया?		युद्ध का परिणाम क्या हुआ?		राजकुमार नौगढ़ और महारानी को महल के बाहर गुप्त मार्ग से किसने बाहर निकाला?		राजकुमार और महारानी किसके यहाँ रहते थे?		शत्रु सेना ने महामंत्री के साथ कैसा व्यवहार किया?		सेनापति के पूँछने प आश्रयदाता ने क्या वि
विकल्प	✓उ0 (जूनागढ़)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (पाटन के राजा ने)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (शत्रुसेना को विजय प्राप्त हुयी)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (मंत्री धर्मदेव)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (रामनाथ अहीर के यहाँ)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (तलवार से मौत के घाट उतार दिया)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (पुत्र को राजकुमार के वस्त्र पहनाकर सेनापति के समक्ष उपस्थित किया)
छात्र आवृत्ति	0		0		0		0		0		0		0
छात्र प्रतिशत	0		0		0		0		0		0		0
छात्रा आवृत्ति	0		0		0		0		0		0		0
छात्रा प्रतिशत	0		0		0		0		0		0		0
कुल विद्यार्थी आवृत्ति	0		0		0		0		0		0		0
कुल विद्यार्थी प्रतिशत	0		0		0		0		0		0		0

छात्र (N) = 63, छात्रा (N) = 37, कुल विद्यार्थी (N) = 100

विश्लेषण

उपरोक्त गौरवशाली गाथा में लिंगानुसार, गौरवशाली इतिहास जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों का जागरूकता प्रतिशत ज्ञात किया गया है। उक्त तालिका में प्राप्त परिणामों के आधार पर प्रश्न सं0 8 से लेकर प्रश्न सं0 14 तक का जागरूकता प्रतिशत शून्य (0) प्राप्त हुआ है।

विवेचना

इस गौरवशाली गाथा के प्रति विद्यालय परिवार एवं सोशल मीडिया विद्यार्थियों को जागरूक करने में असफल है।

5.1.3 किरण देवी के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

तालिका संख्या-5.3

लिंग के आधार पर किरण देवी के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

प्रश्न सं0	15		16		17		18		19		20		21	
प्रश्न	अकबर दिल्ली में प्रतिवर्ष किस मेले का आयोजन करता था?		यह मेला कितने दिन चलता था?		मेले के आयोजन का उद्देश्य क्या था?		अकबर मेले में किस पर मोहित हो गया?		यह किसकी पुत्री/पत्नी थी?		यह किस मेले में गयी थी?		इस राजपूतनी ने अकबर के साथ क्या किया?	
विकल्प	✓30 (नौरोज मेला)	×30 कोई नहीं	✓30 (9 दिन)	×30 कोई नहीं	✓30 (सुन्दर युवतियों को खोजना)	×30 कोई नहीं	✓30 (किरण देवी पर)	×30 कोई नहीं	✓30 (पुत्री-शक्ति सिंह/पत्नी-पृथ्वीराज राठौर)	×30 कोई नहीं	✓30 (नौरोज मेले में)	×30 कोई नहीं	✓30 (अपनी कटार निकालकर अकबर के गर्दन में रख दी)	×30 कोई नहीं
छात्र आवृत्ति	0		0		0		0		0		0		0	
छात्र प्रतिशत	0		0		0		0		0		0		0	
छात्रा आवृत्ति	0		0		0		0		0		0		0	
छात्रा प्रतिशत	0		0		0		0		0		0		0	
कुल विद्यार्थी आवृत्ति	0		0		0		0		0		0		0	
कुल विद्यार्थी प्रतिशत	0		0		0		0		0		0		0	

छात्र (N) = 63, छात्रा (N) = 37, कुल विद्यार्थी (N) = 100

विश्लेषण

उपरोक्त गौरवशाली गाथा में लिंगानुसार, गौरवशाली इतिहास जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों का जागरूकता प्रतिशत ज्ञात किया गया है। उक्त तालिका में प्राप्त परिणामों के आधार पर प्रश्न सं0 15 से लेकर प्रश्न सं0 21 तक का जागरूकता प्रतिशत शून्य (0) प्राप्त हुआ है।

विवेचना

इस गौरवशाली गाथा के प्रति विद्यालय परिवार एवं सोशल मीडिया विद्यार्थियों को जागरूक करने में असफल है।

5.1.4 जैत सिंह चुण्डावत के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

तालिका संख्या-5.4

लिंग के आधार पर जैत सिंह चुण्डावत के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

प्रश्न सं0	22		23		24		25		26	
प्रश्न	मेवाण के महाराणा अमर सिंह की सेना में किन-किन राजपूती दस्तों में अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिये मुकाबला हुआ?		दोनों दलों के बीच किस जगह के अधिकार को लेकर प्रतिस्पर्धा हो रही थी?		प्रतिस्पर्धा में कहाँ के दुर्ग में सबसे पहले प्रवेश करना था?		दुर्ग का फाटक किस दल ने तोड़ा?		चुंडावत वीरों ने प्रतिस्पर्धा जीतने के लिये क्या किया?	
विकल्प	✓उ0 (चुण्डावत और शक्तावत)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (हरावल)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (उन्टाला दुर्ग)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (शक्तावत दल ने)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (स्वयं अपना मस्तक काटकर दुर्ग में फेंक दिया)	✗उ0 कोई नहीं
छात्र आवृत्ति	0		0		0		0		0	
छात्र प्रतिशत	0		0		0		0		0	
छात्रा आवृत्ति	0		0		0		0		0	
छात्रा प्रतिशत	0		0		0		0		0	
कुल विद्यार्थी आवृत्ति	0		0		0		0		0	
कुल विद्यार्थी प्रतिशत	0		0		0		0		0	

छात्र (N) = 63, छात्रा (N) = 37, कुल विद्यार्थी (N) = 100

विश्लेषण

उपरोक्त गौरवशाली गाथा में लिंगानुसार, गौरवशाली इतिहास जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों का जागरूकता प्रतिशत ज्ञात किया गया है। उक्त तालिका में प्राप्त परिणामों के आधार पर प्रश्न सं0 22 से लेकर प्रश्न सं0 26 तक का जागरूकता प्रतिशत शून्य (0) प्राप्त हुआ है।

विवेचना

इस गौरवशाली गाथा के प्रति विद्यालय परिवार एवं सोशल मीडिया विद्यार्थियों को जागरूक करने में असफल है।

5.1.5 सूर्या और परमाल के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

तालिका संख्या-5.5

लिंग के आधार पर सूर्या और परमाल के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

प्रश्न सं0	27		28		29		30		31	
प्रश्न	राजा दाहिर की पुत्रियों का क्या नाम था?		राजा दाहिर और उसके पुत्रों को किसने पराजित किया?		शत्रुओं ने राजा दाहिर की पुत्रियों के साथ क्या किया?		उनको किसकी सेवा में प्रस्तुत किया गया?		उन्होंने शत्रुपक्ष की नीचता का बदला कैसे लिया?	
विकल्प	✓उ0 (सूर्या देवी और परमाल देवी)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (मुहम्मद बिन कासिम की सेना ने)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (बन्दी बना लिया)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (खलीफा सुलेमान-बिन-अब्द-मलिक)	✗उ0 कोई नहीं	✓उ0 (खलीफा से असत्य बोलकर मृत्युदण्ड दिलाया)	✗उ0 कोई नहीं
छात्र आवृत्ति	0		0		0		0		0	
छात्र प्रतिशत	0		0		0		0		0	
छात्रा आवृत्ति	0		0		0		0		0	
छात्रा प्रतिशत	0		0		0		0		0	
कुल विद्यार्थी आवृत्ति	0		0		0		0		0	
कुल विद्यार्थी प्रतिशत	0		0		0		0		0	

छात्र (N) = 63, छात्रा (N) = 37, कुल विद्यार्थी (N) = 100

विश्लेषण

उपरोक्त गौरवशाली गाथा में लिंगानुसार, गौरवशाली इतिहास जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों का जागरूकता प्रतिशत ज्ञात किया गया है। उक्त तालिका में प्राप्त परिणामों के आधार पर प्रश्न सं0 27 से लेकर प्रश्न सं0 31 तक का जागरूकता प्रतिशत शून्य (0) प्राप्त हुआ है।

विवेचना

इस गौरवशाली गाथा के प्रति विद्यालय परिवार एवं सोशल मीडिया विद्यार्थियों को जागरूक करने में असफल है।

5.1.6 गोरा और बादल के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

तालिका संख्या-5.6

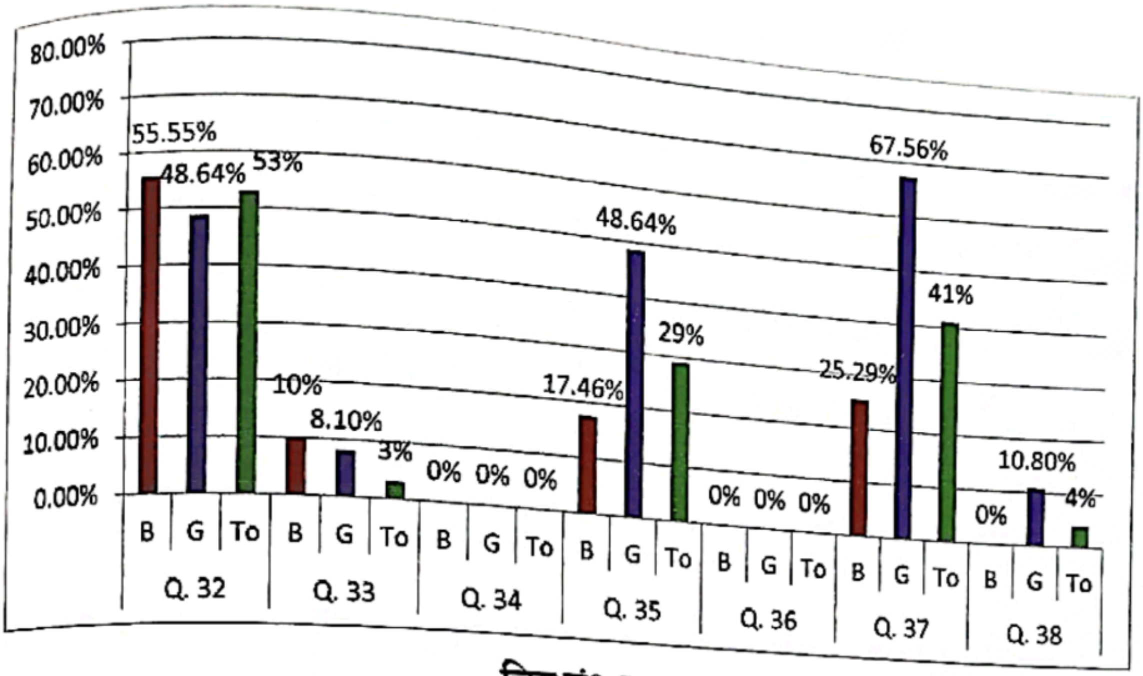
लिंग के आधार पर गोरा और बादल के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

प्रश्न सं0	32	33	34	35	36	37	38
प्रश्न	रानी पद्मावती किस राज्य की महारानी थी?	मेवाड के राजा रतन सिंह ने अपनी सेना की बागडोर किसे दे रखी थी?	इन दोनों का आपस में क्या रिश्ता था?	रानी पद्मावती का मुख शीशे में किस सुल्तान ने देखा था?	मुख देखने के बाद सुल्तान ने क्या किया?	राजा को छुड़ाने के लिये किसने योजना बनाई?	सुल्तान के चंगुल से राजा को छुड़ाने के लिये किसने अपने जान की बाजी लगाई?
विकल्प	✓उ0 (मेवाड) / ×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (गोरा बादल) / ×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (चाचा भतीजा) / ×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (अलाउद्दीन) / ×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (राजा को बंदी बनाया) / ×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (पद्मावती) / ×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (गोरा, बादल) / ×उ0 कोई नहीं
छात्र आवृत्ति	35	0	0	11	0	16	0
छात्र प्रतिशत	55.55	0	0	17.46	0	25.29	0
छात्रा आवृत्ति	18	3	0	18	0	25	4
छात्रा प्रतिशत	48.64	8.10	0	48.64	0	67.56	10.81
कुल विद्यार्थी आवृत्ति	53	3	0	29	0	41	4
कुल विद्यार्थी प्रतिशत	53	3	0	29	0	41	4

छात्र **(N) = 63,** छात्रा **(N) = 37,** कुल विद्यार्थी **(N) = 100**

विश्लेषण

उपरोक्त गौरवशाली गाथा में लिंगानुसार, गौरवशाली इतिहास जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों का जागरूकता प्रतिशत ज्ञात किया गया। तालिका सं0 5.6 के अनुसार छात्रों की जागरूकता का प्रतिशत 0 से लेकर 55.55 प्रतिशत तक पाया गया। छात्राओं की जागरूकता का प्रतिशत 0 से लेकर 67.56 प्रतिशत तक पाया गया और कुल विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर 0 प्रतिशत से लेकर 53 प्रतिशत तक पाया गया।



चित्र सं0-5.2

विवेचना

उक्त तालिका एवं चित्र के अनुसार यह स्पष्ट है कि गोरा और बादल के गौरवशाली इतिहास के प्रति सर्वाधिक जागरूकता छात्राओं में पायी गयी। प्रश्न सं0 34 और 36 का जागरूकता प्रतिशत 0 प्राप्त हुआ। इस गाथा की जागरूकता का कारण पद्मावत फिल्म को अधिक माना जा सकता है।

5.1.7 पृथ्वीराज चौहान के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

तालिका संख्या-5.7

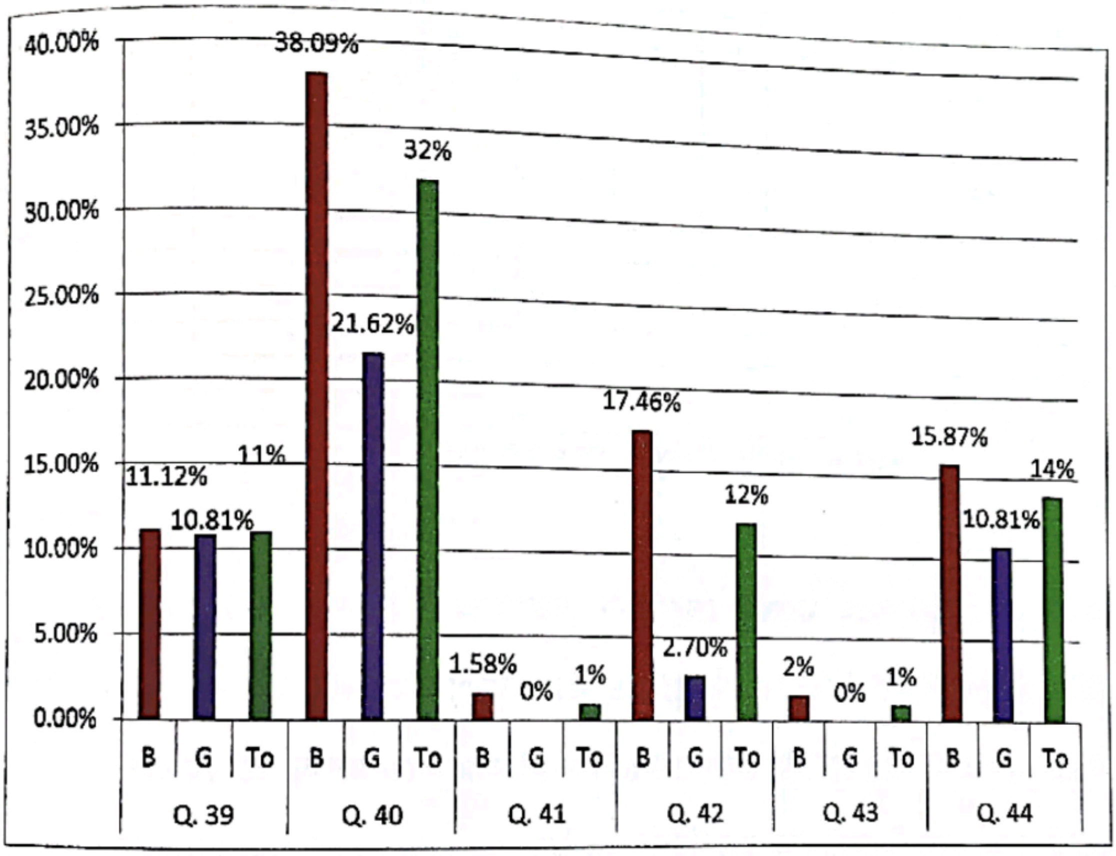
लिंग के आधार पर पृथ्वीराज चौहान के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

प्रश्न सं0	39		40		41		42		43		44	
प्रश्न	पृथ्वीराज चौहान कहाँ के शासक थे?		उन पर किस मुस्लिम शासक ने आक्रमण किया?		इस मुस्लिम शासक का साथ कन्नौज के किस शासक ने दिया?		मुस्लिम शासक ने पृथ्वीराज चौहान के साथ क्या किया?		पृथ्वीराज चौहान ने उससे बदला कैसे लिया?		इसमें पृथ्वीराज की मदद किसने की?	
विकल्प	✓उ0 (अजमेर)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (मुहम्मद गोरी)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (जयचन्द)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (बन्दी/ आंखेनिका)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (शब्द भेदीबाण)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (चन्दबरदायी)	×उ0 कोई नहीं
छात्र आवृत्ति	7		24		1		11		1		10	
छात्र प्रतिशत	11.11		38.09		1.58		17.46		1.58		15.87	
छात्रा आवृत्ति	4		8		0		1		0		4	
छात्रा प्रतिशत	10.81		21.62		0		2.70		0		10.81	
कुल विद्यार्थी आवृत्ति	11		32		1		12		1		14	
कुल विद्यार्थी प्रतिशत	11		32		1		12		1		14	

छात्र (N) = 63, छात्रा (N) = 37, कुल विद्यार्थी (N) = 100

विश्लेषण

उपरोक्त गौरवशाली गाथा में लिंगानुसार, गौरवशाली इतिहास जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों का जागरूकता प्रतिशत ज्ञात किया गया। तालिका सं0 5.7 के अनुसार छात्रों की जागरूकता का प्रतिशत 1 से लेकर 38.09 प्रतिशत तक पाया गया। छात्राओं की जागरूकता का प्रतिशत 0 से लेकर 21.62 प्रतिशत तक पाया गया और कुल विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर 1 प्रतिशत से लेकर 32 प्रतिशत तक पाया गया।



चित्र सं0-5.3

विवेचना

उक्त तालिका एवं चित्र के अनुसार यह स्पष्ट है कि पृथ्वीराज चौहान के गौरवशाली इतिहास के प्रति सर्वाधिक जागरूकता छात्रों में पायी गयी। प्रश्न संख्या 41 और 43 में छात्राओं का जागरूकता प्रतिशत 0 प्राप्त हुआ। इस गाथा की जागरूकता का कारण पृथ्वीराज चैहान सीरियल को अधिक माना जाता है।

5.1.8 झलकारी बाई के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

तालिका संख्या-5.8

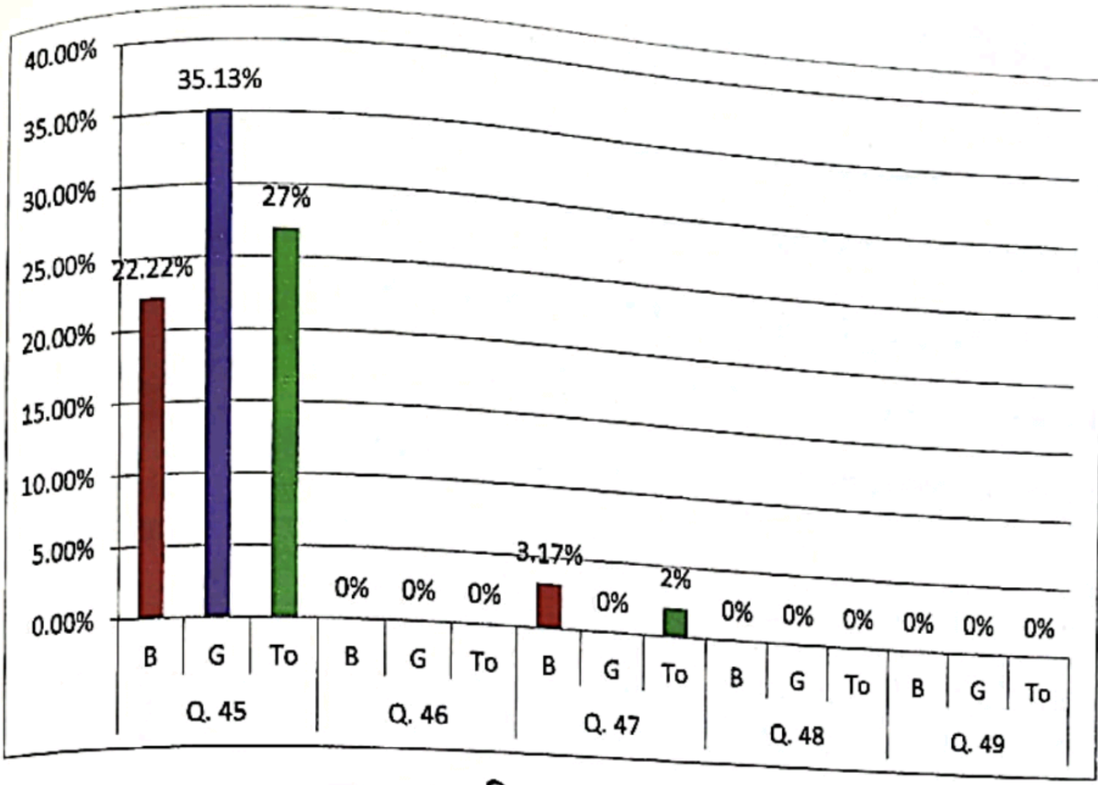
लिंग के आधार पर झलकारी बाई के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

प्रश्न सं0	45		46		47		48		49	
प्रश्न	रानी लक्ष्मीबाई की हम शक्ल कौन थी?		उसे रानी लक्ष्मीबाई ने किस सेना में शामिल किया?		ब्रिटिश सेना से युद्ध में रानी के साथ किसने गद्दारी की?		इस युद्ध में रानी को किले से बाहर भगाने में किसने मदद की?		इसने युद्ध में क्या भूमिका निभाई?	
विकल्प	✓उ0 (झलकारी बाई)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (दुर्गा सेना में)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (दूल्हेराव ने)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (झलकारी बाई ने)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (अंग्रेजों का मुकाबला करते हुये वीरगति को प्राप्त हुयी)	×उ0 कोई नहीं
छात्र आवृत्ति	14		0		2		0		0	
छात्र प्रतिशत	22.22		0		3.17		0		0	
छात्रा आवृत्ति	13		0		0		0		0	
छात्रा प्रतिशत	35.13		0		0		0		0	
कुल विद्यार्थी आवृत्ति	27		0		2		0		0	
कुल विद्यार्थी प्रतिशत	27		0		2		0		0	

छात्र (N) = 63, छात्रा (N) = 37, कुल विद्यार्थी (N) = 100

विश्लेषण

उपरोक्त गौरवशाली गाथा में लिंगानुसार, गौरवशाली इतिहास जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों का जागरूकता प्रतिशत ज्ञात किया गया है। उक्त तालिका में प्राप्त परिणामों के आधार पर प्रश्न सं0 45 से लेकर प्रश्न सं0 49 तक का जागरूकता प्रतिशत अत्यधिक न्यून प्राप्त हुआ है। प्रश्न सं0 45 के प्रति 22.22 प्रतिशत छात्र, 35.13 प्रतिशत छात्राएँ एवं 27 प्रतिशत कुल विद्यार्थी जागरूक पाये गये। प्रश्न सं0 47 के प्रति 3.17 प्रतिशत छात्र, 0 प्रतिशत छात्राएँ एवं 2 प्रतिशत कुल विद्यार्थी जागरूक पाये गये। प्रश्न सं0 46, 48, 49 का प्रतिशत शून्य (0) प्राप्त हुआ।



चित्र सं0-5.4

विवेचना

उक्त तालिका एवं चित्र के अनुसार विश्लेषण में जागरूकता प्रतिशत समग्र विद्यालयों से समाहित है। प्रश्न सं0 47 का जागरूकता प्रतिशत ''ब्रह्म विज्ञान इण्टर कॉलेज अतर्रा'' से प्राप्त है। इस गौरवशाली गाथा के प्रति विद्यालय परिवार एवं सोशल मीडिया विद्यार्थियों को जागरूक करने में असफल है।

5.1.9 शुभ्रक (घोड़ा) के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

तालिका संख्या-5.9

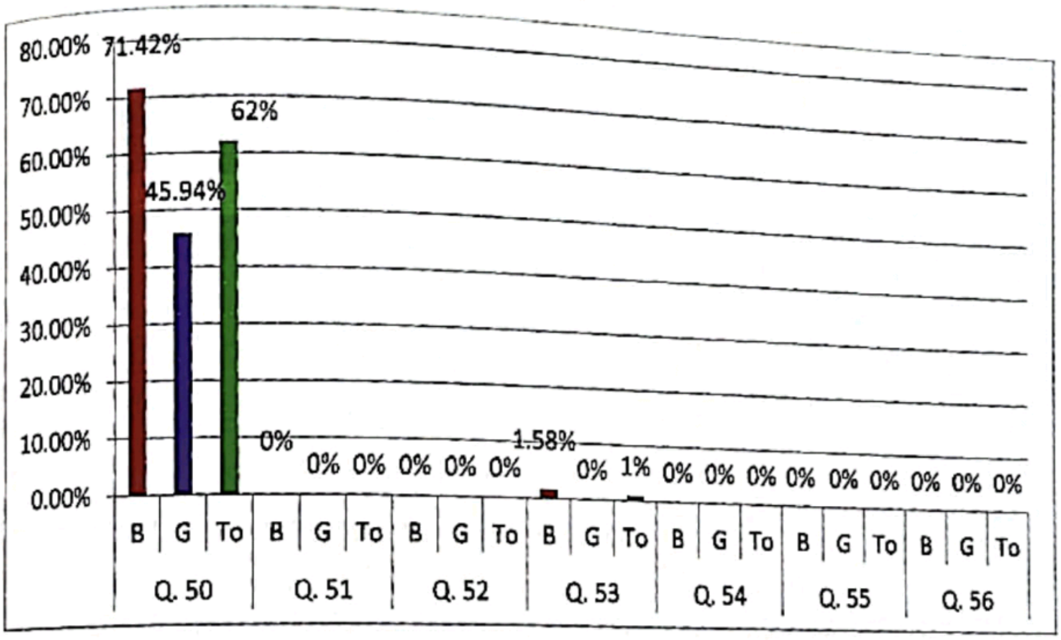
लिंग के आधार पर शुभ्रक (घोड़ा) के विषय में विद्यार्थियों की जागरूकता

प्रश्न सं0	50		51		52		53		54		55		56	
प्रश्न	कुतुबमीनार किस मुस्लिम शासक से सम्बन्धित है?		कुतुबमीनार को प्राचीनकाल में किस नाम से जाना जाता था?		उसने कहाँ के राजकुमार और घोड़े को बन्दी बनाया था?		राजकुंवर के घोड़े का क्या नाम था?		वह राजकुंवर और घोड़े को बन्दी बनाकर कहाँ ले गया?		राजकुंवर की मृत्यु के लिये उसने किस खेल का आयोजन किया?		राजकुंवर के घोड़े ने अपनी स्वामिभक्ति का परिचय कैसे दिया?	
विकल्प	✓उ0 (कुतुबुद्दीन ऐबक)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (विष्णु स्तम्भ)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (उदयपुर के)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (शुभ्रक)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (लाहौर)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (बुजकशी खेल)	×उ0 कोई नहीं	✓उ0 (कुतुबुद्दीन को पैरों से रौंद डाला)	×उ0 कोई नहीं
छात्र आवृत्ति	45		0		0		1		0		0		0	
छात्र प्रतिशत	71.42		0		0		1.58		0		0		0	
छात्रा आवृत्ति	17		0		0		0		0		0		0	
छात्रा प्रतिशत	45.94		0		0		0		0		0		0	
कुल विद्यार्थी आवृत्ति	62		0		0		1		0		0		0	
कुल विद्यार्थी प्रतिशत	62		0		0		1		0		0		0	

छात्र (N) = 63, छात्रा (N) = 37, कुल विद्यार्थी (N) = 100

विश्लेषण

उपरोक्त गौरवशाली गाथा में लिंगानुसार, गौरवशाली इतिहास जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों का जागरूकता प्रतिशत ज्ञात किया गया है। उक्त तालिका में प्राप्त परिणामों के आधार पर प्रश्न सं0 50 से लेकर प्रश्न सं0 56 तक का जागरूकता प्रतिशत अत्यधिक न्यून प्राप्त हुआ है। प्रश्न सं0 50 के प्रति 71.42 प्रतिशत छात्र, 45.94 प्रतिशत छात्राएँ, 62 प्रतिशत कुल विद्यार्थी जागरूक पाये गये। प्रश्न सं0 53 के प्रति 1.58 प्रतिशत छात्र, 0 प्रतिशत छात्राएँ, 1 प्रतिशत कुल विद्यार्थी जागरूक पाये गये। प्रश्न सं0 51, 52, 54, 55, 56 का प्रतिशत 0 प्रतिशत प्राप्त हुआ।



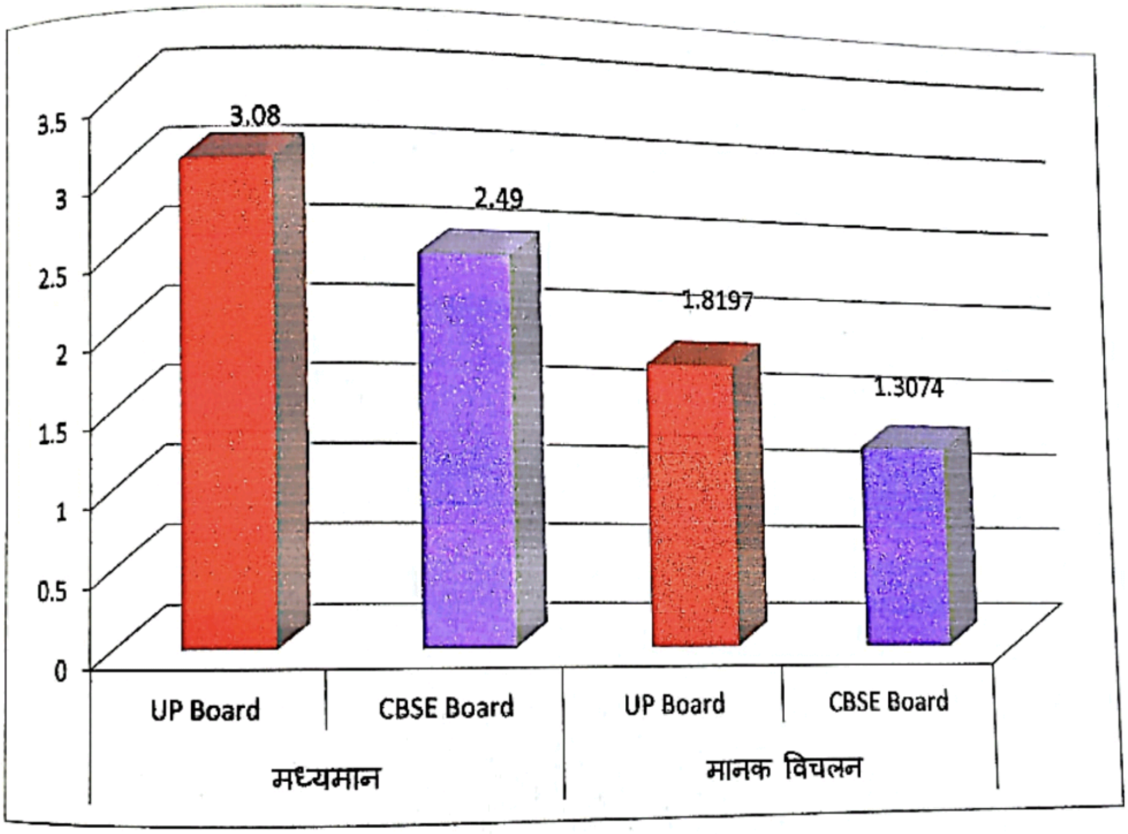
चित्र सं0-5.5

विवेचना

उक्त तालिका एवं चित्र के अनुसार विश्लेषण में जागरूकता प्रतिशत समग्र विद्यालयों से समाहित है। प्रश्न सं0 53 का जागरूकता प्रतिशत ''श्रीमती बूटूबाई इण्टर कॉलेज अतर्रा'' से प्राप्त हुआ है। इस गौरवशाली गाथा के प्रति विद्यालय परिवार एवं सोशल मीडिया विद्यार्थियों को जागरूक करने में असफल है।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति U.P. Board के छात्रों का मध्यमान *3.78* एवं C.B.S.E. Board के छात्रों का मध्यमान *1.0570* है तथा परिगणित क्रान्तिक अनुपात *4.282* है जो कि स्वतंत्रता के अंश *98* के लिए *.05* सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान *1.98* से कम है। अतः शून्य परिकल्पना *2* की C.B.S.E. Board एवं U.P. Board के विद्यार्थियों में गौरवशाली जागरूकता के प्राप्तांकों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर है। *.05* सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना परीक्षण में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति U.P. Board एवं C.B.S.E. Board के छात्रों के जागरूकता स्तर में अंतर पाया गया। इसके मध्यमान एवं मानक विचलन को आरेख चित्र *(5.10)* में प्रदर्शित किया गया है।



चित्र सं0-5.7

भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति U.P. Board एवं C.B.S.E. Board के छात्रों की जागरूकता का

मध्यमान एवं मानक विचलन

ଔଔଔଔଔଔ

6.1 निष्कर्ष

प्राप्त उपब्धियों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का स्तर अत्यधिक निम्न है। प्रस्तुत शोध में जिन गौरवशाली गाथाओं को संग्रहीत किया गया है उनमें से अधिकतर गाथाओं की जानकारी विद्यार्थियों को है ही नहीं। क्योंकि ये गौरवशाली गाथाएँ पाठ्यक्रम में समाहित नहीं है। प्रस्तुत शोध में यह देखा गया कि **अतर्रा क्षेत्र के UP Board एवं CBSE Board के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में गौरवशाली इतिहास जागरूकता में अन्तर है।** इसका कारण है कि UP Board की तुलना में CBSE Board के विद्यालयों में इतिहास विषय के प्रति नीरस होना, वे सोंचते है कि विद्यार्थियों को इतिहास विषय से कोई व्यावसायिक जानकारी प्राप्त नहीं करायी जा सकती, इसलिये ये विद्यालय विज्ञान, अंग्रेजी, गणित और कम्प्यूटर विषय को अधिक बढ़ावा देते हैं। इसकी अपेक्षा UP Board के सरकारी विद्यालयों में कुछ विद्यार्थियों में गौरवशाली इतिहास की जानकारी अधिक प्राप्त हुयी। इसका कारण है कि विद्यार्थियों ने गौरवशाली गाथाओं से सम्बन्धित फिल्म, सीरियल के माध्यम से ये जानकारी प्राप्त की। यह भी पता चला कि विशेष अवसरों में अध्यापकों द्वारा भारत की गौरवशाली गाथाएँ विद्यार्थियों को सुनाई जाती है, जिससे वे अपने देश के महान गौरव को समझ सकें।

विद्यार्थियों में प्रश्न-पत्र हल कराने के समय शोधकर्त्री ने कई ऐसे बिन्दु देखे जो नकारात्मक थे। सर्वप्रथम विद्यार्थियों में प्रश्न-पत्र हल करने की उत्सुकता देखी गयी परन्तु जैसे ही विद्यार्थियों को ये अवगत कराया गया कि प्रश्न पत्र गौरवशाली इतिहास से सम्बन्धित है, उनकी उत्सुकता कम हो गयी। प्रश्नावली हल करने के पूर्व शोधकर्त्री द्वारा निर्देश देने के बावजूद भी विद्यार्थियों ने कई साधारण त्रुटियाँ की। जैसे-कुछ प्रश्नों के उत्तर में प्रश्न को ही लिख दिया, जो मन में आया उत्तर लिख दिया, यहाँ तक कि कुछ प्रश्न पत्र छिपा लिये। प्रस्तुत शोध में यह देखा गया कि **लिंगानुसार (छात्र-छात्राओं) में गौरवशाली इतिहास जागरूकता में कोई अन्तर नहीं है।**

अतः विद्यालय के अध्यापकों का गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूक न होना सबसे बड़ा कारण है तथा इतिहास शिक्षण में शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग न करके रटने पर बल दिया जाता है, जिससे विद्यार्थियों को इतिहास पढ़ना नीरस लगता है। वैसे भी जो इतिहास विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है

वो हमारे देश का इतिहास है ही नहीं, वह विदेशी आक्रान्ताओं का इतिहास है, इसलिये विद्यालय के अध्यापक और विद्यार्थी भारत के गौरवशाली इतिहास से अनभिज्ञ हैं। क्योंकि वह पाठ्यक्रम में समाहित ही नहीं है।

6.2 अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता

अध्ययन के परिणामस्वरूप पाया गया कि माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का स्तर बहुत कम है। यह निश्चित रूप से ही स्वीकार किया जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का जागरूकता स्तर निम्न होने का सम्भावित कारण उनको विद्यालय में मिलने वाला इतिहास शिक्षण का हीन वातावरण है जिससे उन्हें इतिहास विषय का सीमित अनुभव प्राप्त होता है। इसलिये विद्यार्थियों में गौरवशाली इतिहास के प्रति भावनात्मक विकास लाने और गरिमामय घटनाओं से प्रेरित करने के लिये अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता को निम्न बिन्दुओं में दृष्टिगत किया गया है-

- आधुनिक शिक्षा प्रणाली के तहत पाठ्यक्रम में इतिहास की गौरवशाली गाथाओं को समाहित किया जाना चाहिये, जिससे विद्यार्थी पृथ्वीराज चैहान, गोरा और बादल, झलकारी बाई, किरण देवी आदि महान सम्राटों, वीरांगनाओं से परिचित हो सकें तथा उनके अदम्य साहस, मानवता, दया, करूणा, समर्पण, त्याग और बलिदान से गौरवान्वित हो सकें।
- गौरवशाली इतिहास का अध्ययन कर आज की युवा पीढ़ी को धर्म, सभ्यता, संस्कृति से जागरूक कराया जा सकता है, जिससे आप की नई पीढ़ी में पाश्चात् संस्कृति के प्रति जो आकर्षण पैदा हुआ है, वो समाप्त हो सके और वे अपने देश के इतिहास से गौरवान्वित हो सके।
- गणित और विज्ञान के उद्भव में प्राचीन भारत का योगदान अग्रणी है। जब संसार अज्ञानता रूपी अंधकार में था, तब भारत में गणित का प्रकाश फैल रहा था। लेकिन आज की युवा पीढ़ी अपने देश के इतिहास से अनभिज्ञ है, इसलिये सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाट्यकला, सम्मेलन गोष्ठी, सेमिनार आदि के माध्यम से विद्यार्थियों को देश के महान इतिहास से गौरवान्वित किया जा सकता है।

- वर्तमान में हम जो इतिहास पढ़ते है, वह भारत का इतिहास है ही नहीं, क्योंकि हमारे गौरवशाली अतीत के बारे में सही जानकारी के पृष्ठ गायब कर दिये गये इसलिये विद्यालय प्रशासन को छात्रों का विद्यालयी भ्रमण भारत के गौरवशाली स्थलों में ले जाना चाहिये। जिससे वह उन पहलुओं को जान सकें जिसके बारे में आज तक सुना ही नहीं। महान इमारतों को देखकर विद्यार्थियों के मन में अतीत के प्रति उत्सुकता जाग्रत होगी और ज्ञान में सजीवता आयेगी।
- हमारे देश का इतिहास इतना व्यापक है कि किताबों के माध्यम से समझना कठिन है, वह अपने गौरवशाली स्थलों को ऐसे संजोयें जहां पहुंचना दुर्गम है। इसलिये शिक्षण कार्य में शिक्षा तकनीकी का प्रयोग किया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थी कक्षा बैठकर अतीत की गौरवपूर्ण, अदम्य साहस से परिपूर्ण गौरवशाली इतिहास उन सभी बारीकियों को देख सके जो आज तक की शिक्षा प्रणाली में अछूती है।
- पाठ्यक्रम में गौरवशाली इतिहास को पुनर्जीवित कर छात्रों में अपने देश के प्रति आत्मगौरव की अनुभूति होगी वह जान सकेंगे कि हमारा देश सोने की चिड़िया कैसे था, आधुनिक विज्ञान, गणित में हमारे देश का क्या बहुमूल्य योगदान था, हमारे देश की सभ्यता दुनिया में सबसे अनूठी और अलंकृत है। भारत के गौरवशाली इतिहास से छात्रों में राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, भातृत्व जैसी भावनाओं का विकास किया जा सकता है।

6.3 अध्ययन के सुझाव

आज के पीढ़ी की इतिहास में दिलचस्पी कम से कम होती जा रही है। इसका कारण है कि वर्तमान समय विज्ञान और आधुनिकता का काल कहा जाता है इसलिये आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत विद्यार्थियों में भाग के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता लाने के लिये अध्ययन के निम्न सुझाव दृष्टिगत है-

- विद्यालय के अध्यापकों को गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूक होना चाहिये।
- इतिहास शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिये शिक्षण सहायक सामग्री (श्रव्य, दृश्य, श्रव्य-दृश्य सामग्री) का प्रयोग किया जाना चाहिये।

- शोध अध्ययन से सम्बन्धित गौरवशाली गाथाओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिये।
- अध्यापक को ऐतिहासिक कालक्रमों की तिथि, उत्तराधिकारियों के नाम से सम्बन्धित विसंगतियों को दूर कर तर्कसंगत ज्ञान से विद्यार्थियों को अवगत कराना चाहिये।
- विद्यालय प्रशासन और अध्यापकों को गौरवशाली इतिहास के प्रति गलत अवधारणाओं को समाप्त करना चाहिये।
- इतिहास शिक्षण को आधुनिक जीवन में उपयोगी बनाने के लिये पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक प्रविधियों को सम्मिलित किया जाना चाहिये।
- छात्रों को गौरवशाली इतिहास से सम्बन्धित सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं से गौरवान्वित करना चाहिये।
- इतिहास शिक्षण में सजीवता लानी चाहिये।
- विद्यालयी भ्रमण में छात्रों को गौरवशाली स्थलों से सरोकार कराना चाहिये।

6.4 भावी शोध के निमित्त सुझाव

कदाचित कोई भी शोध कार्य स्वयं में सम्पूर्ण नहीं होता है। बहुत से प्रश्न अनुत्तरित रह जाते है। यह तो बिल्कुल सत्य है कि किसी एक शोध कार्य के आधार पर अधिक स्थिर परिणाम नहीं प्राप्त होते है। अधिक स्थिर परिणाम प्राप्त करने हेतु एक ही समस्या पर कई शोध अध्ययन किये जाने चाहिये। अतः परिणामों के सत्यापन के लिये भी आगे शोध कार्य करने की आवश्यकता है। वर्तमान समस्या से सम्बन्धित ऐसे कई पक्ष थे जो शोधार्थिनी द्वारा स्पर्श नहीं किए गये-

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तर-प्रदेश के बाँदा जनपद के सन्दर्भ में किया गया है, भावी शोध कार्य अन्य जनपदों के सन्दर्भ में किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन बाँदा जनपद के अतर्रा क्षेत्र में किया गया है, भावी शोध कार्य अन्य क्षेत्रों में किया जा सकता है।

3. प्रस्तुत शोध अध्ययन UP Board एवं CBSE Board के विद्यार्थियों में तुलनात्मक अध्ययन से किया गया है, भावी शोध कार्य अन्य बोर्डों के विद्यार्थियों में तुलनात्मक अध्ययन से किया जा सकता है।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में किया गया है, भावी शोध कार्य अन्य स्तर के विद्यार्थियों में किया जा सकता है।

5. प्रस्तुत शोध अध्ययन में वीरांगना किरण देवी के गौरवशाली गाथाओं को समाहित किया गया है, भावी शोध कार्य रानी दुर्गावती की गौरवशाली गाथाओं पर किया जा सकता है।

6. प्रस्तुत शोध अध्ययन में इतिहास की 9 गौरवशाली गाथाओं को समाहित किया गया है, भावी शोध कार्य में इससे अधिक गौरवशाली गाथाओं को समाहित किया जा सकता है।

7. प्रस्तुत शोध अध्ययन में पृथ्वीराज चौहान की गौरवशाली गाथाओं को समाहित किया गया है, भावी शोध कार्य में अंतिम हिन्दू सम्राट हेमू की गौरवशाली गाथाओं को समाहित किया जा सकता है।

8. भावी शोध कार्य प्राचीन इतिहास से सम्बन्धित पुरूवंशी महान सम्राट पोरस की गौरवशाली गाथाओं पर किया जा सकता है।

9. भावी शोध कार्य उज्जैन के राजा भरथरी की गौरवशाली गाथाओं पर किया जा सकता है।

10. भावी शोध कार्य लखनऊ के बेगम हजरत की गौरवशाली गाथाओं पर किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://m.facebook.com/notes/ignited-
  mind/%25E0%25A4%2586%25E0%25A4%2587%25E0%25A4%25AF%25E0%25A5%2587%25E
  0%25A4%259D%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%2581%25E0%25A4%25B8%25E0%25A5%
  2580-%25E0%25A4%2595%25E0%25A5%2580-
  %25E0%25A4%25B0%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25A8%25E0%25A5%2580-
  %25E0%25A4%2595%25E0%25A5%2587-
  %25E0%25A4%25B2%25E0%25A4%25BF%25E0%25A4%258F-
  %25E0%25A4%2585%25E0%25A4%25AA%25E0%25A4%25A8%25E0%25A4%25BE-
  %25E0%25A4%25AC%25E0%25A4%25B2%25E0%25A4%25BF%25E0%25A4%25A6%25E0%2
  5A4%25BE%25E0%25A4%25A8-
  %25E0%25A4%25A6%25E0%25A5%2587%25E0%25A4%25A8%25E0%25A5%2587-
  %25E0%25A4%25B5%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25B2%25E0%25A5%2580-
  %25E0%25A4%2587%25E0%25A4%25B8-
  %25E0%25A4%25AE%25E0%25A4%25B9%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25A8-
  %25E0%25A4%25B5%25E0%25A5%2580%25E0%25A4%25B0%25E0%25A4%25BE%25E0%25
  A4%2582%25E0%25A4%2597%25E0%25A4%25A8%25E0%25A4%25BE-
  %25E0%25A4%259D%25E0%25A4%25B2%25E0%25A4%2595%25E0%25A4%25BE%25E0%25
  A4%25B0%25E0%25A5%2580-
  %25E0%25A4%25AC%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%2588-
  %25E0%25A4%2595%25E0%25A5%258B-
  %25E0%25A4%259C%25E0%25A4%25BE/1412349193135791&ved=2ahUKEwiTurGaz8LhAhU2
  yYsBHWt4B3AQFjAOegQIBhAB&usg=AOvVaw1tdXNDsAFkbtv09Spun3iL&cshid=1554800740
  324
- https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://medium.com/%40nikhilnadaan/%
  25E0%25A4%259A%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25B0-
  %25E0%25A4%25AC%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%2582%25E0%25A4%25B8-
  %25E0%25A4%259A%25E0%25A5%258C%25E0%25A4%25AC%25E0%25A5%2580%25E0%2
  5A4%25B8-%25E0%25A4%2597%25E0%25A4%259C-
  %25E0%25A4%2585%25E0%25A4%2582%25E0%25A4%2597%25E0%25A5%2581%25E0%25A
  4%25B2-%25E0%25A4%2585%25E0%25A4%25B7%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%259F-
  %25E0%25A4%25AA%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%25B0%25E0%25A4%25AE%25E0%2
  5A4%25BE%25E0%25A4%25A3-%25E0%25A4%25A4%25E0%25A4%25BE-
  %25E0%25A4%2589%25E0%25A4%25AA%25E0%25A4%25B0-
  %25E0%25A4%25B8%25E0%25A5%2581%25E0%25A4%25B2%25E0%25A5%258D%25E0%25
  A4%25A4%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25A8-
  %25E0%25A4%25B9%25E0%25A5%2588-%25E0%25A4%25A8%25E0%25A4%25BE-
  %25E0%25A4%259A%25E0%25A5%2582%25E0%25A4%2595%25E0%25A5%258B-
  %25E0%25A4%259A%25E0%25A5%258C%25E0%25A4%25B9%25E0%25A4%25BE%25E0%2
  5A4%25A8-
  c17f347d217a&ved=2ahUKEwjNvsOW3sLhAhXkyIsBHRgWD2gQFjAEegQIBBAB&usg=AOvVa
  w0yI8kyVeSWSD13fRKniIkO&cshid=1554803507830
- https://www.ajabgjab.com/2015/03/story-of-rajput-bravery-in-hindi.html
- https://www.ajabgjab.com/2014/07/hada-rani-story-and-history.html?fbclid=IwAR0bgof-
  tu5vGwHF0RuVINiwTf0jSDGrV_PSGrVudv6NrlfDIBd9d0vQ_0k
- https://www.ajabgjab.com/2014/09/ek-aur-pannadhay.html
- https://www.ajabgjab.com/2015/04/akbar-kirandevi-story-in-hindi.html

- https://m.dailyhunt.in/news/india/hindi/janta+ki+awaaz-epaper-jantawaz/phir+ek+kahani+aur+shrimukh+surya-newsid-98265546
- https://roar.media/hindi/main/history/legend-warriors-gora-and-badal-hindi-article/
- https://www.bhaskar.com/news/RAJ-JOD-HMU-MAT-latest-jodhpur-news-022503-222752-NOR.html
- https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://www.bhaskar.com/amp/news/RAJ-JOD-HMU-MAT-latest-jodhpur-news-022503-222752-NOR.html&ved=2ahUKEwid65SFwM3jAhUNfH0KHTD2D2sQFjADegQIBRAI&usg=AOvVaw2OM9ZFnaymhFiu2fUfvLCK&ampcf=1&cshid=1563970811225
- https://m.dailyhunt.in/news/india/hindi/democratic-epaper-democrtc/bharat+desh+ka+nam+bharat+hi+kyo+pada+padhie+bharat+nam+ke+piche+ka+saccha+bharatiy+itihas-newsid-103797077
- https://hi.quora.com/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4-%E0%A4%95%E0%A5%8B-%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4-%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A5%8B%E0%A4%82-%E0%A4%95%E0%A4%B9%E0%A4%BE-%E0%A4%9C%E0%A4%BE%E0%A4%A4%E0%A4%BE
- https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://www.pravakta.com/history-of-indias-glorious/&ved=2ahUKEwjlisG_8MXhAhWRF6YKHdr1C6QQFjAEegQIBBAB&usg=AOvVaw1P6oYWkyzzsI3uXprFj4yE&cshid=1554912097489

ଓଓଓଓଓଓ

परिशिष्ट

गौरवशाली इतिहास जागरूकता प्रश्नावली

निर्देशक

डॉ0 राजीव अग्रवाल

शोधकर्त्री

प्रतिमा देवी

निम्न सूचनायें भरिए-

नाम :

लिंग :

कक्षा :

कॉलेज का नाम :

दिनांक :

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में गौरवशाली इतिहास जागरूकता का अध्ययन से सम्बन्धित है, इसमें गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न/कथन है। दिये गये कथन के सामने आप सही उत्तर लिखें। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल लघु शोध कार्य में प्रयुक्त की जायेगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

1. किस पत्नी ने अपने पति को उसका कर्त्तव्य याद दिलाने के लिये सबसे बड़ा बलिदान दिया?

....

2. यह किसकी पत्नी थी? ....

3. विवाह के कितने दिन बाद उन्होंने अपना बलिदान दिया? ....

4. उस सरदार को किसका पत्र आया? ....

5. पत्र में क्या संदेश था? ....

6. युद्ध मार्ग से उस सरदार ने रानी को क्या संदेश भेजा? ....

7. रानी ने पत्र के प्रतिउत्तर में क्या किया? ....

8. राव महिपाल कहाँ के राजा थे? ....

9. उनके राज्य पर किसने आक्रमण किया? ....

10. युद्ध का परिणाम क्या हुआ? ....

11. राजकुमार नौगढ़ और महारानी को महल के बाहर गुप्त मार्ग से किसने बाहर निकाला? ....

12. राजकुमार और महारानी किसके यहाँ रहते थे? ....

13. शत्रु सेना ने महामंत्री के साथ कैसा व्यवहार किया? ....

14. सेनापति के पूँछने पर आश्रयदाता ने क्या किया? ....

15. अकबर दिल्ली में प्रतिवर्ष किस मेले का आयोजन करता था? ....

16. यह मेला कितने दिन चलता था? ....

17. मेले के आयोजन का उद्देश्य क्या था? ....

18. अकबर मेले में किस पर मोहित हो गया? ....

19. यह किसकी पुत्री/पत्नी थी? ....

20. यह किस मेले में गयी थी? ....

21. इस राजपूतनी ने अकबर के साथ क्या किया? ....

22. मेवाण के महाराणा अमर सिंह की सेना में किन-किन राजपूती दस्तों में अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिये मुकाबला हुआ? ....

23. दोनों दलों के बीच किस जगह के अधिकार को लेकर प्रतिस्पर्धा हो रही थी? ....

24. प्रतिस्पर्धा में कहाँ के दुर्ग में सबसे पहले प्रवेश करना था? ....

25. दुर्ग का फाटक किस दल ने तोड़ा? ....

26. चुंडावत वीरों ने प्रतिस्पर्धा जीतने के लिये क्या किया? ....

27. राजा दाहिर की पुत्रियों का क्या नाम था? ....

28. राजा दाहिर और उसके पुत्रों को किसने पराजित किया? ....

29. शत्रुओं ने राजा दाहिर की पुत्रियों के साथ क्या किया? ....

30. उनको किसकी सेवा में प्रस्तुत किया गया? ....

31. उन्होंने शत्रुपक्ष की नीचता का बदला कैसे लिया? ....

32. रानी पद्मावती किस राज्य की महारानी थी? ....

33. मेवाड़ के राजा रतन सिंह ने अपनी सेना की बागडोर किसे दे रखी थी? ....

34. इन दोनों का आपस में क्या रिश्ता था? ....

35. रानी पद्मावती का मुख शीशे में किस सुल्तान ने देखा? ....

36. मुख देखने के बाद सुल्तान ने क्या किया? ....

37. राजा को छुड़ाने के लिये किसने योजना बनाई? ....

38. सुल्तान के चंगुल से राजा रतन सिंह को छुड़ाने के लिये किसने अपने जान की बाजी लगाई?

....

39. पृथ्वीराव चौहान कहाँ के शासक थे? ....

40. उन पर किस मुस्लिम शासक ने आक्रमण किया था? ....

41. इस मुस्लिम शासक का साथ कन्नौज के किस शासक ने दिया? ....

42. मुस्लिम शासक ने पृथ्वीराज चौहान के साथ क्या किया? ....

43. पृथ्वीराज चौहान ने उससे बदला कैसे लिया? ....

44. इसमें पृथ्वीराज की मदद किसने की? ....

45. रानी लक्ष्मीबाई की हम शक्ल कौन थी? ....

46. उसे रानी लक्ष्मीबाई ने किस सेना में शामिल किया? ....

47. ब्रिटिश सेना से युद्ध में रानी के साथ किसने गद्दारी की? ....

48. इस युद्ध में रानी को किले से बाहर भगाने में किसने मदद की? ....

49. इस युद्ध में रानी को किले से बाहर भगाने में किसने मदद की? ....

50. कुतुबमीनार किस मुस्लिम शासक से सम्बन्धित है? ....

51. कुतुबमीनार को प्राचीनकाल में किस नाम से जाना जाता था? ....

52. उसने कहाँ के राजकुमार और घोड़े को बन्दी बनाया था? ....

53. राजकुँवर के घोड़े का क्या नाम था? ....

54. वह राजकुँवर और घोड़े को बन्दी बनाकर कहाँ ले गया?? ....

55. राजकुँवर की मृत्यु के लिये उसने किस खेल का आयोजन किया? ....

56. राजकुँवर के घोड़े ने अपनी स्वामिभक्ति का परिचय कैसे दिया? ....

रानी पद्ममिनी भारतीय इतिहास की धरोहर, संरक्षण करना सरकार की जिम्मेदारी - सकराय



जिला जन सम्पर्क कार्यालय खण्डवा

समाचार पत्र कतरन

पत्र का नाम .... दिनांक 25 NOV 2016

चौथा संसार इंदौर

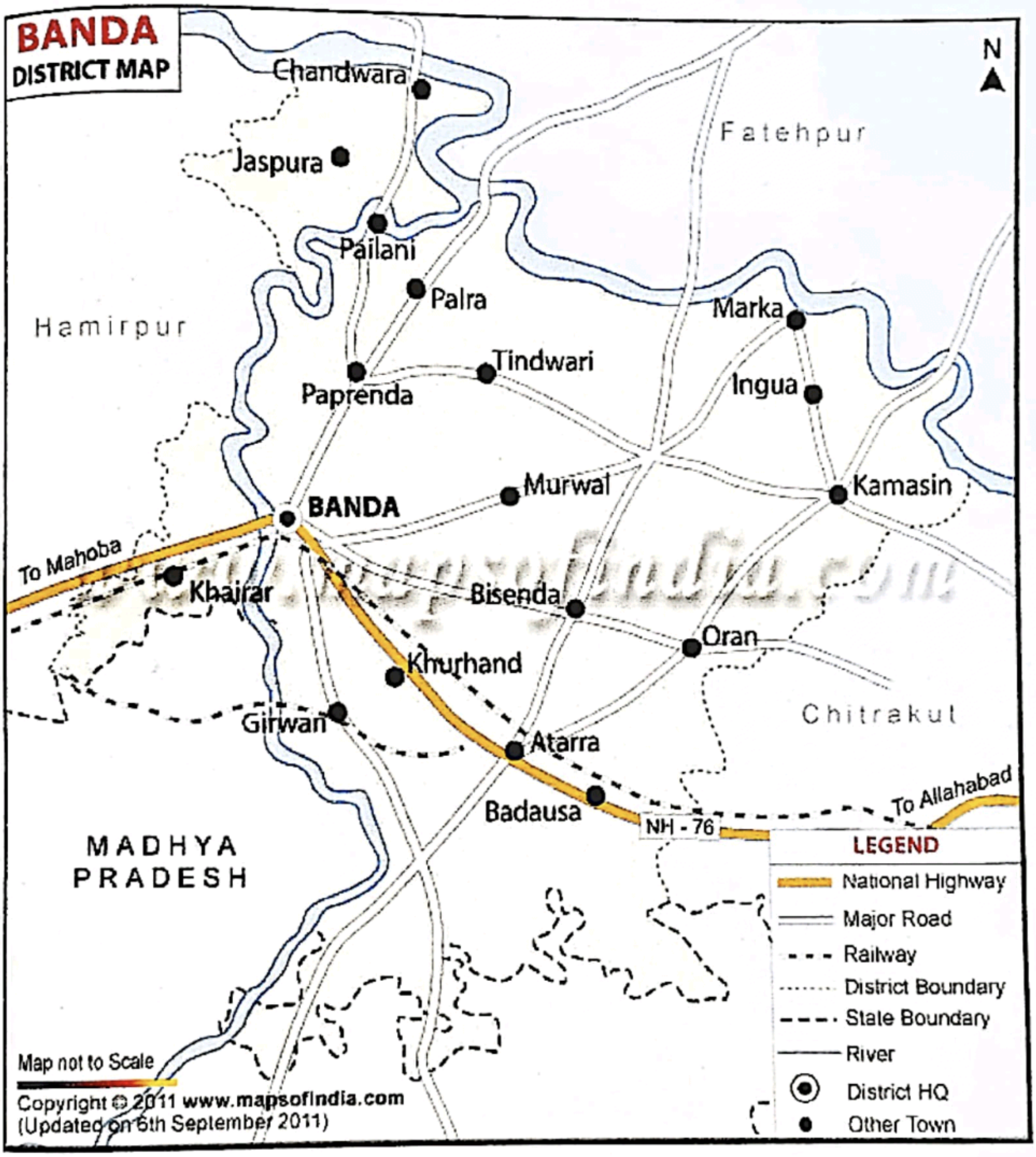


झलकारी बाई का इतिहास एवं बलिदान हमेशा याद किया जाएगा-बोरकर

वीरांगना झलकारी बाई की जयंती पर हुआ कार्यक्रम हुआ कार्यक्रम

पधाना, (निप्र)। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की झलक होने से कहलाई झलकारीबाई इस अवसर पर विधायक योगीत्र नवल सिंग बोरकर ने कहा की रानी लक्ष्मीबाई की अंग्रेजो से लडाई लड़ते हुए झलकारीबाई ने भी अंग्रेजो ने मुकाबला कर रानी लक्ष्मीबाई की जान बचा कर अपने प्राणो की अहुती देकर इतीहास कायम किया इसी लिए आज हम झलकारी बाई की जयंती मना रहे है जप उपाध्यक्ष सेवादास पटेल ने भी अपने विचार प्रकट किये इस अवसर पर सासंद प्रतीनीधी ओपी श्रीवास महीलाबालविकास सभापती श्रीमती ममता बाई.कपील सतोष प्रकास ऐकले झलकारीबाई की जयती जप सभागृह मे महीला सशक्तिकरण एवं महीलाबाल विकास पधाना द्वारा कार्यक्रम रखा गया इस अवसर पर महीलाबालविकास अधीकारी प्रवीणबाली एव परवेक्षीकाए आगनवाडी कार्यकर्ता सहाईकाओ सहीत समस्त अधीकारी कर्मचारी ग्रामीण जन उपस्थित थे कार्यक्रम का संचालन गणेश कनाडे ने किया तथा आभार पर्यवेक्षिकाओ द्वारा माना गया । साहसी कार्य करने वाली महिलाओ एव छात्राओ को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

बाँदा जनपद के सन्दर्भ में मानचित्र



जीवन वृत्त



E-mail : pratimadwivedi122@gmail.com

नाम : प्रतिमा देवी

माता का नाम : श्रीमती मनोरमा देवी

पिता का नाम : गिरीश कुमार मिश्र

गृह जनपद का नाम व पता : बाँदा यू0पी0 2102001

पत्र व्यवहार का पता : ग्राम–मवई, पो0–शिव, थाना–बिसण्डा, जिला–बाँदा (यू0पी0) पिन कोड–210121

जन्म तिथि : 28/06/1991

मोबाइल न0. : 9695155562

शैक्षिक विवरण :

परीक्षा	बोर्ड/वि0वि0 का नाम	परीक्षा वर्ष	अनुक्रमांक	पूर्णांक	प्राप्तांक
हाईस्कूल	यू0पी0 बोर्ड	2006	1555697	600	342
इण्टरमीडिएट	यू0पी0 बोर्ड	2008	0830449	500	302
स्नातक (बी0ए0)	बुन्देलखण्ड वि0वि0 झाँसी	2011	106016067	1000	607
परास्नातक (इतिहास)	बुन्देलखण्ड वि0वि0 झाँसी	2013	302121140033	900	542
बी0एड0	डी0बी0आर0ए0 यू0 आगरा	2014	140190141039	800	560

दिनांक :

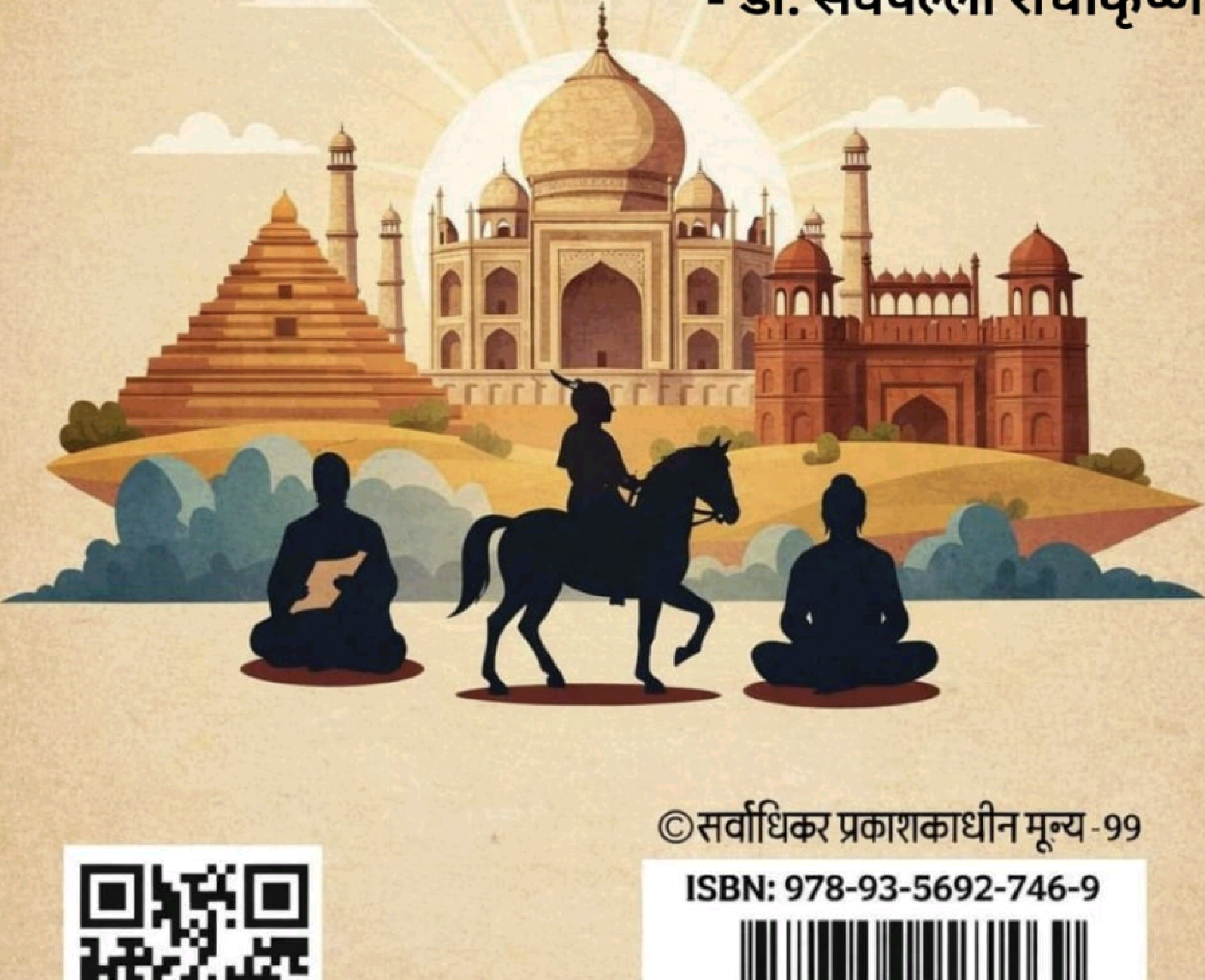
स्थान :

प्रतिमा देवी
(प्रतिमा)

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन

"जिस राष्ट्र में शिक्षा नहीं, वह राष्ट्र
कभी महान नहीं हो सकता।"

- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन



ISBN: 978-93-5692-746-9

9 789356 927469